हिन्दी सान्ध्य दैनिक जौनपुर,लखनऊ व भदोही से प्रकाशित

देश की उपासना

www.Deshkiupasana.com
www.Deshkiupasana.in
www.Deshkiupasana.org

देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए

dku live

वर्ष : 01 अंक–154 : जौनपुर, शुक्रवार 17 फरवरी 2023 सान्ध्य दैनिक (संस्करण) पेज –4 मूल्य : 2 रूपया

चीनी के साथ अब 'ग्रीन ईंधन' का स्रोत बन रहीं यूपी की चीनी मिलें –सीएम योगी

लखनऊ ब्यूरो : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश में चीनी उद्योग के नवाचारों की सराहना की है। उन्होंने कहा है कि बीते छह वर्षों में प्रदेश की चीनी मिलों ने आधुनिकता की जो राह पकड़ी है, उससे आज यूपी की चीनी मिल, एक सामान्य चीनी उत्पादन करने वाली मिल से आगे बढ़कर 'शुगर कॉम्प्लेक्स' के रूप में उभर कर आई है। एक ही परिसर में चीनी भी बन रहा, कोजन प्लांट भी है, तो ऑक्सीजन प्लांट और एथनॉल प्लांट भी है। उन्होंने कहा है कि देश में सर्वाधिक गन्ना और चीनी उत्पादन करने वाला उत्तर प्रदेश की चीनी मिलें आज प्रधानमंत्री की नीतियों को अपनाते हुए सबसे ज्यादा एथनॉल उत्पादन कर 'ग्रीन एनर्जी' के स्रोत के रूप में पहचानी जा रही हैं। यह बदलाव हमारे किसानों की आय में वृद्धि और जीवन में समृद्धि लाने वाली हैं। मुख्यमंत्री द्वारा चीनी उद्योग के 120 वर्ष के गौरवमयी यात्रा पर आधारित कॉफी टेबल बुक का विमोचन किया गया, साथ ही प्रदेश के चीनी उद्योग को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण योगदान करने वाली विभूतियों को सम्मानित किया गया। पद्मश्री मीनाक्षी सरावगी सहित कई हस्तियों को यह सम्मान मरणोपरांत दिया गया। प्रदेश में चीनी उद्योग के 120 वर्ष पूरे होने के ऐतिहासिक मौके पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने कहा कि 120 वर्ष पहले किसानों के हित को ध्यान में रखकर प्रदेश में पहला चीनी मिल तत्कालीन गोरखपुर जिले के देवरिया (प्रतापपुर) में स्थापित किया गया था। हालिया कुछ दशकों में जिस तरह चीनी मिलें बंद होती जा रहीं थीं, किसान हताश और परेशान थे, पलायन को मजबूर थे, उसने चीनी उद्योग के सामने बड़ा संकट खड़ा कर दिया था। लेकिन 2017 के बाद परिवेश बदला। चीनी मिलों से संवाद कर तय हुआ कि जब तक किसान का गन्ना खेत में होगा, चीनी मिलें गन्ना खरीद जारी रखेंगी और यह सुखद है कि मिलों ने ऐसा ही किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि बीते छह वर्ष में डबल इंजन सरकार में गन्ना किसानों को 01 लाख 97 हजार करोड़ रुपये का भुगतान डीबीटी के माध्यम से किया गया। जल्द ही यह 2 लाख करोड़ हो जाएगा। उन्होंने कहा कि आज प्रदेश में 100 चीनी मिलें ऐसी हैं, जो खरीद के 10 दिन के भीतर किसान का भुगतान कर दे रही हैं। यह बड़ा बदलाव है, शेष मिलों को भी ऐसे ही प्रयास करना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज गन्ना पर्ची की समस्या नहीं है, घटतौली की शिकायतें समाप्त हो गई हैं तो गन्ना किसानों की संख्या 45 लाख से 60 लाख हो गई। गन्ने का उत्पादन भी बढ़ा है और रकबा भी। यही नहीं रिकवरी भी 11: से अधिक हो रही है। चीनी मिल मालिकों की उपस्थिति के इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने कहा कि चीनी उद्योग और

सरकार के बीच गन्ना किसान है। मिलों को अपनी नीतियों के केंद्र में किसानों को रखना चाहिये। विशेष अवसर पर, कोरोना काल की चुनौतियों की चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री ने उस दौरान चीनी उद्योग के योगदान की सराहना भी की। उन्होंने कहा कि पूरे देश में उद्योग बंद थे लेकिन उत्तर प्रदेश की चीनी मिलें चल रही थीं और चीनी मिलों के सहयोग से सैनीटाइजर का रिकॉर्ड उत्पादन करते हुये 23 राज्यों में सैनिटाइजर भी उपलब्ध कराया गया। चीनी मिलों ने ऑक्सीजन प्लांट भी लगाए। संकट के समय एकजुट होकर काम किया। गन्ना विकास एवं चीनी उद्योग मंत्री लक्ष्मी नारायण चौधरी ने पूर्ववर्ती सरकारों में एक–एक कर बंद होती चीनी मिलों की पीड़ा को साझा करते हुए बीते 06 वर्ष में चीनी उद्योग के पुनरोद्धार के लिए मुख्यमंत्री के प्रति आभार जताया। उन्होंने भविष्य की जरूरतों को देखते हुए अधिकाधिक एथनॉल प्लांट की स्थापना पर जोर दिया। कार्यक्रम में इंडियन शुगरमिल एसोसिएशन के अध्यक्ष अदित्य झुनझुनवाला ने राज्य में पहली चीनी मिल की स्थापना के 120 वर्ष पूरे होने पर सभी को बधाई दी तो चीनी और एथनॉल को लेकर स्पष्ट नीति के लिए केंद्र व राज्य सरकार को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने वर्ष 2025 तक पेट्रोल में एथनॉल मिश्रण को 20: तक करने का लक्ष्य रखा है। चीनी मिलें इसके लिए अपनी ओर पूरा सहयोग करने को तैयार हैं। उन्होंने गन्ना उत्पादकता को बढ़ाने और अतिरिक्त एथनॉल पर ध्यान देने की जरूरत भी बताई, साथ ही गन्ना विज्ञानियों से गन्ने की नई प्रजाति पर शोध–अनुसंधान के लिए आग्रह किया।

ममता चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा गरीबो एवं असहायों के लिये की जा रही है सेवा –बृजेश पाठक

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय लखनऊ। ममता का पर्याय और नर सेवा नारायण सेवा को अपना उद्देश्य मानकर दिन रात असहायों और गरीबों की सेवा करने वाली ममता चैरिटेबल ट्रस्ट जनता को निरोग करने के लिए भव्य स्वास्थ्य जागरूकता शिविर एवं आरोग्य मेला का आयोजन नेहरू नगर पार्क, लखनऊ में किया गया जिसका शुभारंभ उत्तर प्रदेश सरकार के उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक एवं पूर्व उपमुख्यमंत्री दिनेश शर्मा एवं राजीव मिश्रा मुख्य ट्रस्टी ममता चैरिटेबल ट्रस्ट के कर कमलों द्वारा किया गया शिविर में मनोज कुमार राय एडवोकेट, प्रदीप शर्मा, अमन द्विवेदी, ललित, पंकज तिवारी एवं ट्रस्ट परिवार के सम्मानित सदस्य उपस्थित रहें। सभी चिकित्सकों को उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक , पूर्व उपमुख्यमंत्री दिनेश शर्मा एवं राजीव मिश्रा द्वारा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया स्वास्थ्य जागरूकता शिविर में 2169 लोगों ने अपना रजिस्ट्रेशन करवाया मेले में केजीएमसी, पीजीआई के विख्यात चिकित्सकों द्वारा जनता का निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण किया गया एवं उन्हें 15 दिन की निःशुल्क औषधि वितरित की गई। स्वास्थ्य मेले में जिसमें गैस्ट्रोलॉजिस्ट डॉ. दीपक अग्रवाल द्वारा लोगों को गैस्ट्रो जैसी बीमारी के बारे में जानकारी एवं उपचार बताया गया। इसके साथ ही डॉ. शालिनी गुप्ता द्वारा महिलाओं में हो रही कैंसर, ब्रेस्ट कैंसर एवं स्त्री रोग के विषय में विस्तृत जानकारी देकर उन्हें

उपचार के लिये बताया गया। स्त्री रोग विशेषज्ञ ने महिलाओं के स्वास्थ्य हेतु एक संगोष्ठी की जिसमे महिलाओं में होने वाले बीमारियों कैंसर,ब्रेस्ट कैंसर से बचाव और उपचार, महिलाओं में 5 साल में एक बार जांच आदि को जरूरी बताया स्वास्थ्य मेले में डॉक्टरो ने जनता का स्वास्थ्य परीक्षण किया मेले में 500 कंबल 10 विकलांगों को ट्राई साइकिल, 10 बैसाखी एवं महिलाओं को सैनेटरी किट वितरित की गई। स्वास्थ्य मेलें में हजारों की संख्या में लोग स्वास्थ्य परीक्षण के लिये उपस्थित रहें। यह जानकारी ममता चैरिटेबल ट्रस्ट के मुख्य ट्रस्टी राजीव मिश्रा द्वारा दी गई।

हज–2023 यात्रा आवेदन की अन्तिम तिथि 10 मार्च 2023 तक

जौनपुर सू.वि. : जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी, कमलेश कुमार मौर्य ने अवगत कराया है कि सचिव/कार्यपालक उ0प्र0 राज्य हज समिति 10ए विधान सभा मार्ग लखनऊ द्वारा हज–2023 पर जाने वाले हज यात्रियों के सम्बन्ध में निम्नानुसार दिशा–निर्देश जारी किये गये है :– हज–2023 हेतु आनलाईन आवेदन 10 फरवरी 2023 से आरम्भ होकर अन्तिम तिथि 10 मार्च, 2023 तक जारी रहेगा, हज आवदेन–पत्र भरने से पूर्व हज–2023 के दिशा–निर्देशों को ध्यान से पढ़ ले, आवेदन की निर्धारित तिथि से भारतीय अंतराष्ट्रीय पासपोर्ट की बैद्यता 03 फरवरी, 2024 से कम न हो, आवदेन करते समय कोई रजिस्ट्रेशन शुल्क जमा नही करना है। एक कवर में एक परिवार के अधिकतम चार व न्यनतम एक व्यस्क व दो इंफेण्ट आवेदन कर सकेंगे, आवेदन फार्म में अंकित आवासीय पता व पासपोर्ट में अंकित पता एक समान होने पर आवासीय प्रमाण के रूप में पासपोर्ट की फोटोप्रति मान्य होगी। यदि इस में पता भिन्न है, तो स्वहस्ताक्षरित प्रपत्र–जैसे आधार कार्ड, बैंक पासबुक, वोटर पहचान पत्र व गत तीन माह के बिजली/टेलीफोन बिल (लैण्डलाईन)/पानी का बिल, गैस कलेक्शन प्रमाण–पत्र आवेदन फार्म के साथ संलग्न कर वेबसाईट पर अपलोड करना होगा, आवेदक को उड़ान से एक माह पूर्व कोविड–19 की वैक्सिन लगवाना आवश्यक है, तभी यात्रा की अनुमति होगी, हज–2023 हेतु अभी अन्तिम रूप से कुल खर्च का निर्धारण नही हुआ है, केवल दो किस्तों प्रथम रू0–81,500.00 व द्वितीय किस्त रू0–1,70,000.00 है, तीसरी व अन्तिम किस्त की सूचना बाद में दी जायेगी। जनपद–जौनपुर से हज आवेदन करने वाले हज यात्रियों को आवश्यक जानकारी मो0 नं0 9795551560 पर कर सकते है। उक्त के अतिरिक्त जनपद स्तर पर हज यात्रियों की सुविधा के लिए एक हज फैसिलीटेशन केन्द्र खोले गये है जिसमें मदरसा जामिया मोमिना लिलबनात सिपाह जौनपुर है। अतः हज यात्रा–2023 पर जाने वाले जनपद के इच्छुक हज यात्रियों को सूचित किया जाता है कि हज कमेटी की वेबसाईट– www.hajcommittee.gov.in पर दिये गये विस्तृत दिशा निर्देशों के अनुसार हज आवेदन की प्रक्रिया पूर्ण करें तथा किसी भी असुविधा हेतु हज फैसीलीटेशन केन्द्र अथवा अधोहस्ताक्षरी कार्यालय से सम्पर्क कर सकते है।

बदमाशों ने तमंचे से मारकर सर्राफा कारोबारी से की लूट

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : नेवढ़िया थाना क्षेत्र के अढ़नपुर मॉडल स्कूल के पास गुरुवार की देर रात बाइक सवार बदमाशो ने सर्राफा व्यवसाय की पिटाई कर उसे असलहा के बल पर बदमाशों ने करीब 3.5 लाख के आभूषण लूट लिए और व्यवसाई को मारपीट कर घायल कर दिया।घटना की जानकारी मिलते ही मौके पर पहुची पुलिस ने घायल व्यवसाई को नेवढ़िया सीएचसी में इलाज के लिए भर्ती कराय गया जहां से हालत गंभीर देख जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। सूचना मिलते ही एसपी डॉक्टर अजय पाल शर्मा ने घटनास्थल का निरीक्षण किया। मड़ियाहूं थाना क्षेत्र के सेऊर निवासी रविशंकर 42 वर्ष की रामनगर ब्लाक के सामने आभूषण की दुकान है। गुरुवार की देर रात दुकान बंद कर अपने भाई राजू और गांव के एक अन्य व्यक्ति के साथ बाइक से घर जा रहे थे। गांव के पास तीन बदमाशों ने उनकी बाइक को रोक लिया और धक्का देकर तीनों को गिरा दिया। इसके बाद अवैध तमंचा दिखाकर रविशंकर से आभुषण से भरा बैग छीनने लगे विरोध करने पर उन्होंने रविशंकर की जमकर पिटाई कर दी। इसके बाद उनकी बाइक की चाबी और आभूषण से भरा बैग छीनकर फरार हो गए। रविशंकर के अनुसार बाइक में करीब 50 ग्राम सोने और डेढ़ किलो चांदी के आभूषण थे। स्थानीय लोगो की माने तो

घटनास्थल से कुछ ही दूर कुछ दिन पहले इस तरह की वारदातें पहले भी हो चुकी हैं। घटना के संबंध में शुक्रवार को जानकारी देते हुए अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण ने बताया कि नेवढ़िया थाना क्षेत्र के अढ़नपुर गांव के पास से सूचना प्राप्त हुई की सर्राफा कारोबार करने वाले एक व्यक्ति के साथ कुछ लोगों ने लूटपाट किया है। इस पर पुलिस मौके पर पहुंची उन्हें उपचार के लिए हॉस्पिटल में भर्ती कराया मौके पर छानबीन किया उनकी लिखित तहरीर दर्ज कर लिया गया जल्दी ही घटना का अनावरण कर लिया जाएगा। सोने चांदी कितने ग्राम थे इसकी अभी जांच पड़ताल की जा रही है पीड़ित द्वारा आकलन कर इसकी जानकारी दी जाएगी।

कॉवेन्ट स्कूलों से बेहतर प्रदर्शन कर रहे है परिषदीय विद्यालय –मनीष वर्मा

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : मुफ्तीगंज ब्लाक के कम्पोजिट विद्यालय तारा उमरी में आयोजित वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में नौनिहालों के सांस्कृतिक प्रस्तुति के उत्कृष्ट प्रतिभा की तारीफ करते हुए कार्यक्रम के मुख्यअतिथि जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा ने कहा कि विद्यालय वो जगह है जहाँ बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है, यहाँ के बच्चों की प्रस्तुति व कार्यक्रम का संचालन कर रही बच्ची की प्रतिभा को देखकर लगता है कि परिषदीय स्कूलों बच्चों में असीम प्रतिभा है बस जरूरत है उनको उचित मंच मिले। विशिष्ट अतिथि जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी डॉ गोरखनाथ पटेल ने कहा कि यहां के बच्चों की प्रतिभा को देखते हुए कहा जा सकता है कि परिषदीय विद्यालयों की भौतिक परिवेश हो या शैक्षणिक वातावरण या फिर बच्चों में आत्मविश्वास की बात हो ये हर तरह से कान्वेंट स्कूलों से आगे हैं। विशिष्ट अतिथि डॉ अरविंद सिंह ने कहा कि कम्पोजिट विद्यालय तारा उमरी के प्रांगण में आने के बाद और यहां के बच्चों की प्रस्तुति को देखने के बाद परिषदीय विद्यालयों के प्रति बनी मेरी अवधारणा गलत साबित हो गयी। यहाँ के बच्चों की प्रतिभा और इनका आत्मविश्वास अद्भुत है। जिला अध्यक्ष अमित सिंह ने कहा कि कम्पोजिट विद्यालय तारा उमरी के प्रधानाध्यापक राजेश सिंह ने मुख्यालय से सुदूर इस तारा कम्पोजिट विद्यालय को इतनी लगन और मेहनत से संवारा है जिसका परिणाम है कि आज यह बेसिक शिक्षा परिषद जौनपुर का वास्तव में तारा है। इससे पहले जिलाधिकारी मनीष कुमार

वर्मा ने दीप प्रज्वलित कर वार्षिकोत्सव का शुभारंभ किया। कक्षा आठ की बच्ची रानी और रीत के सरस्वती वंदना पर प्रस्तुति कर सबका मन मोह लिया छोटी बच्ची दिव्यांशी की गणेश स्तुति पर मनमोहक नृत्य ने सभी का दिल जीत लिया। कक्षा दो की सोनाक्षी ने मराठी गाने पर शानदार नृत्य कर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। बच्चों की एक से बढ़कर एक प्रस्तुति ने वार्षिकोत्सव में आए अभिभावकों एंव क्षेत्रवासियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। विद्यालय प्रधानाध्यापक राजेश सिंह ने कहा कि हमारा सदैव प्रयास रहा है कि विद्यालय के बच्चों का शिक्षा के साथ साथ खेल कूद एंव सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी सहभागिता हो क्योंकि इससे उनके सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता ग्राम प्रधान जयप्रकाश सिंह ने किया और कार्यक्रम का संचालन विद्यालय की कक्षा आठ की छात्रा आकांक्षा विश्वकर्मा ने किया। इस अवसर पर जिला मंत्री सतीश पाठक जिला संयुक्त मंत्री शैलेंद्र सिंह राम सिंह राव मनोज सिंह मंत्री राम कृपाल यादव मुन्ना लाल यादव दशरथ संतोष सच्चिदानंद मधुरानी प्रियंका सिंह इत्यादि लोग उपस्थित रहे।

पाठक बन्धुओं से अनुरोध

आप सभी से अनुरोध है कि ऑनलाइन समाचार पत्र पढ़नें हेतु हमारे निम्नांकित वेबसाइट **www.Desh ki upasana.com** का अधिक अधिक उपयोग करें–तथा हमारें यू–ट्यूब चैनल / पोर्टल - **dku live** सत्य एवं प्रमाणिक खबरों के लिए Like&Subscribe जरूर कीजिए।

–संपादक

रसोई गैस सुरक्षा कार्यशाला आयोजित

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय झबरेड़ा,हरिद्वार। इंटर कॉलेज लाठर देवा हुन नारसन के प्रांगण में इंडेन गैस के सौजन्य से सूर्यांश इंडेन गैस एजेंसी झबरेड़ा के बैनर तले एक दिवसीय रसोई गैस सुरक्षा कार्यशाला

संपन्न हुई। इस कार्यशाला में प्रतिनिधि अरविंद ने छात्र छात्राओं को रसोई गैस से संबंधित जानकारी तथा संबंधित सुरक्षा की भी जानकारी दी। इस अवसर पर विद्यालय के छात्र छात्राओं ने ज्ञानवर्धक प्रश्न भी पूछे जिसकी जानकारी अरविंद ने बड़े रोचक ढंग से दी। इस अवसर पर प्रधानाचार्य राकेश शर्मा ने भी रसोई गैस से संबंधित सुरक्षा की जानकारी दी। इस कार्यशाला में सचिन तथा प्रदीप ने विशेष सहयोग दिया। इस समारोह में संदीप वर्मा रविंद्र पाल चौहान विपुल सालार दिनेश सिंह सुशील कुमार आलोक कुमार द्विवेदी मुकेश बगवाड़ी अरुणा राठी अनीता रानी अंकित रोहिल्ला समेत भारी संख्या में छात्र–छात्राएं उपस्थित थे।

पटना निवासी एमबीबीएस की छात्रा संदिग्ध हालात में 9 वीं मंजिल से गिरी : मौत

लखनऊ ब्यूरो : टीएस मिश्रा मेडिकल कालेज की एमबीबीएस प्रथम वर्ष की छात्रा मृणाल सिंह (23) की शुक्रवार सुबह छात्रावास के 9वीं मंजिल से संदिग्ध हालात में गिरने से मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस के मुताबिक शुरूआती पड़ताल में मानसिक रुप से परेशान होने की बात सामने आई है। परिजनों से संपर्क किया गया है। छात्रा के कमरे की तलाशी ली जा रही है। वहीं मोबाइल की डिटेल खंगाली जा रही है। प्रभारी निरीक्षक सरोजनीनगर संतोष आर्य के मुताबिक मूल रूप से बिहार पटना के राजपथ निवासी कौशल किशोर सिंह की बेटी मृणाल टीएस मिश्रा मेडिकल कालेज से एमबीबीएस प्रथम वर्ष की छात्रा थी। वह कालेज परिसर में ही बने छात्रावास में रहती थी। पुलिस के मुताबिक उसका कमरा छात्रावास की नवीं मंजिल पर 902 है। शुक्रवार सुबह 9.45 बजे वह गैलरी में टहल रही थी। अचानक से वह गैलरी से नीचे कूद गई। नीचे खून से लथपथ पड़ा देख आननफानन में कालेज के ही इमरजेंसी में ले जाया गया। जहां उसकी मौत हो गई। परिसर में अफरातफरी का माहौल सुबह ही अचानक से एमबीबीएस छात्रा की 9वीं मंजिल से गिरने से मौत की सूचना परिसर में फैल गई। जिसके बाद पूरे परिसर में अफरातफरी का माहौल बन गया। प्रभारी निरीक्षक संतोष आर्य के मुताबिक शुरूआती पड़ताल में छात्रा के मानसिक परेशान होने की बात सामने आई है। इस संबंध में परिजनों को सूचना दी गई है। देर शाम तक लखनऊ पहुंचने की संभावना है। वहीं परिजनों ने अभी तक कोई आरोप नहीं लगाया है। फिलहाल कमरे से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। छात्रा के कमरे व मोबाइल को खंगाला जा रहा है।

डॉ कमलेश व वंदना को मिला सृजन सम्मान

ब्यूरो चीफ आर. एल पाण्डेय लखनऊ। 131वाँ सृजन सम्मान यू पी प्रेस क्लब और उ प्र सहित्य सभा द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम अध्यक्ष प्रदीप सारंग, विशिष्ट अतिथि ज्योतिषाचार्य लीना परिहार, वरिष्ठ पत्रकार हसीब सिद्दीकी सृजन के संस्थापक सर्वेश अस्थाना ने सृजन सम्मान से डॉ कमलेश नारायण श्रीवास्तव व युवा सम्मान से वंदना विशेष गुप्ता को सम्मानित किया। महेश गुप्त महेश के संयोजन व संचालन और संध्या त्रिपाठी की वाणी वंदना के साथ सुभाष रसिया, खुशबू गौतम, प्रतिभा श्रीवास्तव, उमेश सक्सेना, श्रुति भट्टाचार्य, सुभाष गुरुदेव, सरोज बाला सोनी, योगी योगेश शुक्ल, केवल प्रसाद सत्यम, मनमोहन बाराकोटी, महेश अस्थाना, अमित अनपढ़, कमल किशोर भावुक, अखंड प्रताप सिंह, राजीव वर्मा वत्सल, प्रतिभा गुप्ता, अनिता सिन्हा, अनिल चौधरी, अलका गुप्ता, गुर्जर लखनवी, राम राज भारती, आनंद आकुल, रविशंकर भट्ट, आशीष आनंद आर्य, अविजित सिंह, मधु पाठक गायत्री अरुणिमा, सुधा मिश्रा ने काव्यपाठ किया। धन्यवाद ज्ञापन सुभाष रसिया ने किया।

facebook YouTube WhatsApp twitter Instagram

–सुविचार–

जो दूसरों को जानता है वह बुद्धिमान है, जो स्वयं को जानता है वह ज्ञानवान है।

–साभार ज्ञानामृत पत्रिका

सम्पादकीय

राज्यपालों की नियुक्ति : यह पहली नजीर नहीं

मोदी सरकार की सिफारिश पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने हाल में जिन 13 राज्यपालों को बदला और नियुक्त किया है, उनमें सबसे ज्यादा चर्चा सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जस्टिस एस. अब्दुल नजीर की है। मूलतः कर्नाटक के रहने वाले जस्टिस नजीर पिछले माह 4 जनवरी को ही रिटायर हुए थे और करीब एक महीने बाद ही उन्हें सरकार ने आंध्र प्रदेश जैसे बड़े राज्य का राज्यपाल नियुक्त कर दिया। खास बात यह है कि जस्टिस नजीर, राम जन्मभूमि केस में सर्वोच्च न्यायालय की संविधान पीठ के सदस्य रहे हैं, पीठ ने 9 नवंबर 2019 को अयोध्या में विवादित भूमि को राम जन्मभूमि ट्रस्ट को सौंपने का ऐतिहासिक फैसला दिया था। यही नहीं, जस्टिस नजीर, मोदी सरकार के नोटबंदी के फैसले को सही ठहराने वाली बेंच का भी हिस्सा थे। साथ ही सुप्रीम कोर्ट की जिस बेंच ने तीन तलाक को अवैध ठहराया था, उसमें भी जस्टिस नजीर शामिल थे। ये वो फैसले हैं, जो सरकार के पक्ष में रहे हैं। वैसे किसी पूर्व न्यायाधीश को राज्यपाल या सांसद बनाए जाने का यह कोई पहला मामला नहीं है। सबसे पहले तत्कालीन जवाहर लाल नेहरू सरकार ने 1952 में सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश रहे जस्टिस सैयद फजल अली को पहले ओडिशा और बाद में असम का राज्यपाल नियुक्त किया था। तब इसका कोई खास विरोध नहीं हुआ था। लेकिन बाद के वर्षों में रिटायर्ड न्यायाधीशों को ज्यादातर आयोग, ट्रिब्यूनलों में नियुक्त किया जाता रहा।

पहले भी हो चुकी हैं ऐसी नियुक्तियां

1997 में तत्कालीन देवेगौड़ा सरकार की सिफारिश पर सुप्रीम कोर्ट की पूर्व जस्टिस रहीं फातिमा बीवी को तमिलनाडु का तथा जम्मू–कश्मीर राज्य के पूर्व मुख्य न्यायाधीश सुखदेव सिंह कंग को केरल का राज्यपाल नियुक्त किया गया था। हालांकि, फातिमा बीवी को एआईएडीएमके नेता जयललिता को मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाने के विवाद के बाद राज्यपाल पद से इस्तीफा देना पड़ा था। मजे की बात यह है कि उस वक्त अटल सरकार में मंत्री रहे अरुण जेटली ने पूर्व न्यायाधीशों को राज्यपाल बनाए जाने की आलोचना की थी, लेकिन 2014 में केन्द्र में सत्ता में आने के बाद मोदी सरकार और भाजपा ने उसी परंपरा को आगे बढ़ाना शुरू किया। साल 2014 में ही सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के रिटायर्ड चीफ जस्टिस पी. सदाशिवम को केरल का राज्यपाल नियुक्त किया, जबकि सुप्रीम कोर्ट से रिटायर होने के बाद जस्टिस सदाशिवम अपने गांव लौट गए थे। उस वक्त 'न्यायपालिका की स्वतंत्रता' का मुद्दा जोरशोर से उठा था।

हालांकि, सदाशिवम द्वारा दिए गए फैसलों पर कोई उंगली नहीं उठी, लेकिन यह सवाल शिद्दत से उठा कि क्या पूर्व न्यायाधीशों को इस तरह राजनीतिक नियुक्तियां स्वीकार करनी चाहिए और क्या सरकार ऐसा करके न्यायपालिका को क्या संदेश देना चाहती है?

संवैधानिक दृष्टि से पूर्व जजों के राजनीतिक पुनर्वास पर कोई रोक नहीं है। लेकिन यह संवैधानिकता से ज्यादा नैतिकता का प्रश्न है। क्योंकि रिटायर्ड जजों को राजनीतिक नियुक्ति देना अथवा अन्य किसी लाभ के पद से नवाजा जाना अदालत में बतौर जज उनके द्वारा दिए जाने वाले फैसलों की निष्पक्षता अथवा पूर्वापेक्षा पर कहीं न कहीं सवाल खड़े करता है। रिटायरमेंट के बाद लाभ के पद पर तैनाती से जज द्वारा अपने कार्यकाल में दिए गए कानूनी फैसलों से यह ध्वनि निकल सकती है कि उसने संबंधित मामले में फैसला इस प्रत्याशा में दिया कि इसके बदले में भविष्य में उसे कुछ लाभ मिलेगा। यह भी संदेश जा सकता है कि चूंकि संबंधित जज ने सरकार के पक्ष में अथवा किसी विशिष्ट राजनीतिक विचारधारा को लाभ पहुंचाने वाला फैसला दिया, इसलिए उसकी ऐवज में सरकार ने पूर्व जज को लाभ का पद देकर उपकृत किया। हालांकि, जजों को कानून के दायरे में रहकर ही फैसले देने होते हैं, लेकिन उन फैसलों में अंतर्निहित भाव को भी बखूबी पढ़ा जा सकता है। जस्टिस नजीर और राम जन्मभूमि फैसला जस्टिस नजीर के संदर्भ में यह सवाल शिद्दत से इसलिए उठ रहा है, क्योंकि राम जन्मभूमि मामले में फैसला देने वाली पांच जजों की संवैधानिक पीठ में से तीन जजों का पुनर्वास मोदी सरकार ने कर दिया है। उन पांच जजों में से एक तो अभी देश के प्रधान न्यायाधीश हैं ही। राम जन्मभूमि मामले में ऐतिहासिक फैसला देने वाली संविधान पीठ के अध्याक्ष रहे तत्कालीन प्रधान न्यायाधीश रंजन गोगोई को सरकार ने पद से रिटायर होते ही तुरंत राज्यसभा का सदस्य नामित कर दिया। जस्टिस गोगोई ने कई ऐसे फैसले दिए, जिनमें सरकार के पक्ष को उचित माना गया। मसलन उन्होंने रफाल सौदे की समीक्षा और राहुल गांधी के खिलाफ अदालत की अवमानना के मामलों की भी सुनवाई की। रफाल सौदे में मोदी सरकार पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे थे लेकिन रंजन गोगोई की बेंच ने रफाल सौदे की जांच को लेकर दायर की गई सभी याचिकाओं को खारिज कर दिया था। इनके अलावा जस्टिस रंजन गोगोई ने जम्मू–कश्मीर में अनुच्छेद 370 रद्द किए जाने के बाद दायर सभी बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिकाओं को भी खारिज कर दिया था। इसके पहले भारत के 21वें चीफ जस्टिस रहे रंगनाथ मिश्रा को कांग्रेस पार्टी ने साल 1998 में राज्यसभा भेजा था। जस्टिस रंगनाथ मिश्र राज्यसभा जाने वाले सुप्रीम कोर्ट के दूसरे जज थे। उनसे पहले जस्टिस बहारुल इस्लाम जनवरी 1983 में सुप्रीम कोर्ट के जज के पद से रिटायर हुए थे और उसी साल जून में कांग्रेस ने उन्हें राज्यसभा भेज दिया था। जजों की राजनीतिक पदों पर नियुक्ति पर संवैधानिक रोक नहीं जस्टिस गोगोई के बाद राम जन्मभूमि मामले में संविधान पीठ के दूसरे सदस्य जस्टिस अशोक भूषण को नेशनल कंपनी लॉ अपीलेट ट्रिब्यूनल (एनक्लेट) का चेयरमैन बना दिया और अब जस्टिस नजीर आंध्र के राज्यपाल बन गए हैं। वैसे पूर्व जजों को राजनीतिक पदों पर नियुक्त करने पर कोई संवैधानिक रोक नहीं है। भारत के संविधान का अनुच्छेद 124(7) सुप्रीम कोर्ट से रिटायर होने वाले जजों को केवल न्यायपालिका के क्षेत्र में कोई पद लेने से रोकता है। सुप्रीम कोर्ट के जज रिटायर होने के बाद किसी अदालत में वकालत भी नहीं कर सकते हैं। साल 1958 में अपनी चौदहवीं रिपोर्ट में भारत के विधि आयोग ने जजों के रिटायर होने के बाद सरकारी पद लेने पर रोक की सिफारिश की थी, लेकिन उस पर कोई कार्रवाई नहीं हुई। पूर्व जजों की राजनीतिक नियुक्तियों पर एक सुझाव पूर्व जस्टिस आरएम लोढ़ा ने यह दिया था कि रिटायर होने के बाद जजों के लिए दो साल का 'कूलिंग ऑफ' पीरियड होना चाहिए। यानी इस अवधि के समाप्त होने से पहले जज कोई पद स्वीकार नहीं कर सकते। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने अक्तूबर 2014 में इस सुझाव को खारिज कर दिया था। एक तर्क यह भी है कि क्या जजों को दूसरी जिम्मेदारियों से केवल इसलिए दूर रखा जाना चाहिए कि वो सुप्रीम कोर्ट या हाई कोर्ट के जज रहे हैं? क्या इससे उनके अपने अधिकारों की अनदेखी नहीं होती? क्या किसी जज को मरते दम तक निष्पक्ष रहना ही साबित करना पड़ेगा? क्या वह न्यायाधीश रहने के मानसिक बोझ से कभी मुक्त नहीं हो सकता? क्या वह भी एक सामाजिक जीव नहीं है? इन पेचीदा सवालों के जवाब भी जटिल ही हैं। लेकिन यहां असली सवाल यह है कि यदि पूर्व जज सरकार के लाभकारी राजनीतिक पदों को स्वीकार करते हैं तो उसका जनता में क्या संदेश जाता है? क्या यह कि जज ने जो फैसले दिए, वो किसी प्रतिदान की अपेक्षा में थे अथवा पूर्णतः न्यायिक मूल्यों के अनुरूप और निजी आग्रह दुराग्रहों से परे थे? वैसे जज खुद चाहें तो सरकार द्वारा राजनीतिक पदों की पेशकश ठुकरा कर उच्च न्यायिक और नैतिक मानदंड कायम कर सकते हैं, लेकिन इसके लिए नैतिक साहस और प्रतिबद्धता चाहिए। ऐसा नैतिक साहस अभी तक तो किसी पूर्व जज ने नहीं दिखाया है। हालांकि ऐसा करने से उस जज के फैसलों की निष्पक्षता और प्रामाणिकता ही पुष्ट होती।

ये लेखक के अपनें विचार हैं।

सपा नेता रोली तिवारी पार्टी से निष्कासित : स्वामी प्रसाद मौर्य के बयान का किया था विरोध

आगरा ब्यूरो : रामचरितमानस विवाद को लेकर घमासान मचा हुआ है। इस बीच समाजवादी पार्टी ने पूर्व प्रवक्ता और राज्य महिला आयोग की पूर्व सदस्य रोली तिवारी को पार्टी से निष्कासित कर दिया है। उनके निष्कासन को लेकर पार्टी ने कोई वजह नहीं बताई। हालांकि उनके निष्कासन को पार्टी लाइन से हटकर रामचरित मानस के सम्मान में यात्रा निकालने की घोषणा से जोड़ा जा रहा है। मौर्य के बयान का किया था विरोध सपा सरकार में रोली तिवारी राज्य महिला आयोग की सदस्य थीं। फिर पार्टी ने इन्हें प्रदेश प्रवक्ता बनाया। वर्तमान में इनके पास कोई दायित्व नहीं था। रामचरित मानस की पंक्तियों को लेकर पिछले दिनों सपा नेता स्वामी प्रसाद मौर्य ने टिप्पणी की। इस टिप्पणी का रोली तिवारी ने विरोध किया। सोशल मीडिया पर पोस्ट की। रामचरित मानस सम्मान यात्रा निकालने का एलान कर दिया था। बृहस्पतिवार को उन्हें पार्टी से बाहर का रास्ता दिखा दिया गया। पार्टी से निकाले जाने का नहीं है

दुख– रोली तिवारी रोली तिवारी का कहना है कि वह राम में आस्था रखती हैं। 16 वर्षों से पार्टी की कार्यकर्ता थीं। उन्हें निकाले जाने का दुख नहीं। उन्होंने कहा जो राम चाहेंगे अब वही होगा। वहीं, जिलाध्यक्ष लाल सिंह लोधी का कहना है कि पार्टी ने पूर्व में ही धार्मिक बयानबाजी को प्रतिबंधित किया था। सभी नेताओं को हिदायत दी गई थी। उसके बावजूद पूर्व प्रवक्ता ने पार्टी लाइन से हटकर बयान दिए।

सीएम ने विजेता खिलाड़ियों को किया सम्मानित

गोरखपुर मण्डल प्रभारी आशुतोष चौधरी : रीजनल स्पोर्ट्स स्टेडियम में आयोजित सांसद खेल महाकुंभ के समापन समारोह व पुरस्कार वितरण के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विजई खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया आज रीजनल स्पोर्ट्स स्टेडियम में लगभग गोरखपुर जनपद के तहसील ब्लाक व जिला स्तर के 700 से अधिक खिलाड़ियों को पुरस्कार दिया बैडमिंटन युगल वर्ग में अंडर–17 अंडर–19 के विजेता सूरज यादव और विष्णु यादव को भी मुख्यमंत्री ने सम्मानित किया मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने खेल व खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक कदम उठाए हैं। स्पोर्ट्स कॉलेजों स्टेडियमों आदि के जरिये खिलाड़ियों को बेहतरीन सुविधाएं दी जा रही हैं। साथ ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक विजेता प्रदेश के खिलाड़ियों की सीधी भर्ती द्वारा राजपत्रित पदों पर नियुक्ति की व्यवस्था की गई है। इसके अलावा प्रदेश के प्रतिभावान व कुशल खिलाड़ियों को प्रदेश के शासकीय–सार्वजनिक उपक्रमों में, लोक सेवा आयोग की परिधि के बाहर के पदों पर नियुक्ति हेतु दो प्रतिशत क्षैतिज आरक्षण की व्यवस्था की गई है। सीएम योगी ने कहा कि सांसद खेल महाकुंभ से गांव–गांव खिलाड़ियों की नई पौध तैयार हो रही है। एक–एक जिले में पांच से सात हजार तक नए खिलाड़ी तैयार हुए हैं। इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में युवक व महिला मंगल दलों के जरिये ग्रामीण खिलाड़ियों को स्पोर्ट्स किट उपलब्ध कराया जा रहा है। अबतक हजारों गांवों में स्पोर्ट्स किट उपलब्ध करा दिए गए हैं। मुख्यमंत्री ने सभी खिलाड़ियों को आगे बढ़ने, कुछ नया करने व सीखने की प्रेरणा देते हुए कहा कि आप सभी प्रतियोगिताओं में बढ़चढ़कर प्रतिभाग करें, केंद्र व राज्य सरकार हर प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर है।

लखनऊ के अतिथि देवो भवः के भाव से पूर्वोत्तर से आये हुये विद्यार्थियो का हुआ अभिनन्दन

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय लखनऊ। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) की अंतरराज्यीय छात्र जीवन दर्शन की राष्ट्रीय एकात्मता यात्रा का बुधवार को यहां पहुंची। यात्रा में शामिल प्रतिनिधियों का अभिनंदन किया गया। प्रतिनिधि यहां के स्थानीय परिवारों में रह कर भारतीय संस्कृति की एकता का अनुभव कर रहे हैं। इसी के निमित्त लखनऊ विश्वविद्यालय में नागरिक अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया जिसमे मुख्य अतिथि परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने कहा सील टूर के यात्री एक भारत श्रेष्ठ भारत के ब्रांड एम्बेसडर है।इस यात्रा में पहले आये हुए विद्यार्थी आज भी यहां के परिवारों से जुड़े हुए हैं।मुख्य वक्ता अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजशरण शाही ने बताया की राष्ट्रीय अखंडता व एकात्मता को बल प्रदान करने में अपनी भूमिका और पुनर्निर्माण के उद्देश्य से सक्रिय राष्ट्रनिष्ठ दृष्टिकोण का ही विचार किया। उपर्युक्त पृष्ठभूमि में देश भर के छात्रों के बीच समन्वय एवं परस्पर संबंधों के सहारे राष्ट्रीयता के भावों को सदृढ़ करने के उद्देश्य से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा वर्ष 1966 में विभिन्न भाषा–भाषी राज्यों के छात्र समुदाय में राष्ट्रीय एकीकरण की मूल भावना को प्रकट करने वाला अति महत्त्वपूर्ण प्रकल्प अंतरराज्य छात्र जीवन–दर्शन (SEIL% Students^ EÛperience in Inter&State Living) प्रारंभ किया गया। विशिष्ट अतिथि अधिवक्ता परिषद के क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्रीहरि बोरकर कहते है कि हम सब एक हैं और सांस्कृतिक रूप से भी समान हैं, सांस्कृतिक सौहार्द की भावना उत्पन्न करना। देश के युवाओं को विविध अवसर प्रदान कराना, ताकि वे विविधता में निहित एकता का प्रत्यक्ष अनुभव कर सकें , अपर अधिवक्ता कुलदीप पति त्रिपाठी ने बताया सांस्कृतिक आदान–प्रदान के माध्यम से एकात्मता के अंतसूत्रों को दृढ़ और व्यापक

बनानाएवं, कहते है की अभावीप का यह अनूठा प्रयास राष्ट्रीय एकात्मता–अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए किसी छात्र संगठन द्वारा की गयी एक गंभीर सकारात्मक पहल हैं ।विशेष उपस्थिति कुलपति प्रो आलोक राय ने सील टूर में आए सभी विद्यार्थी का स्वागत अभिनंदन किया साथ ही बताया की पूर्वोत्तर के छात्रों की लखनऊ विश्विद्यालय में बढ़ती संख्या को देखते हुए लखनऊ विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा केंद्र भी वहा बनया जायेगा एवम् असम प्रांत मंत्री सीमांत वैश्य भी उपस्थित रहे।नागरिक अभिनंदन में सील टूर में आए सभी विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया ,जिसमें उत्तर प्रदेश के प्रमुख लोक नृत्य की प्रस्तुति की गई इसी के साथ पूर्वोत्तर से आए सील टूर कि छात्रों ने भी लोक नृत्य कर अपने प्रदेश को दर्शाया। इस कार्यक्रम का संचालन महानगर मंत्री सिद्धार्थ विशेन ने किया साथ ही साथ कार्यक्रम का आभार ज्ञापन महानगर अध्यक्ष प्रोफेसर मंजुला उपाध्याय द्वारा किया गया। मुख्य रुप से प्रांत संगठन मंत्री अंशुल व विकासर्थ विद्यार्थी के राष्ट्रीय संयोजक राहुल गौर रहे। कार्यक्रम में अन्य उपस्थित के रूप में प्रो पूनम टंडन प्रो नीतू सिंह, डॉ प्रतिमा गोश, प्रो ममता बटनागर, डॉ इंद्रेश शुक्ल, डॉ संजय बाजपाई, प्रो राकेश द्विवेदी ,प्रांत मंत्री आकाश पटेल, प्रीति, प्रियेश,जतिन, कुसुम कनौजिया, अक्षय, नामिता, अनिवेश सिंह,सलोनी, अंशिका, शुभम सेंगर,मुस्कान, अभिषेक मौर्या, मो हमजा,अनंग, नलिन, विकाश तिवारी, शोभित वर्मा, सूरजभान, हिमांशु, निलेश, के के यादव,शिवम सम्राट, आकांक्षा एवम अन्य कार्यकर्त्ता उपस्थिति रहे

ट्रक ने बाइक में पीछे से मारी टक्कर : दो छात्रों की मौत

आजमगढ़ ब्यूरो : आजमगढ़ के रानी की सराय थाना क्षेत्र के पटेल नगर में शुक्रवार की दोपहर स्कूल से प्रवेश पत्र लेकर बाइक से घर जा रहे हाईस्कूल के दो छात्रों को ट्रक ने पीछे से टक्कर मार दी। अभी लोग दोनों छात्रों को अस्पताल ले जाने का इंतजाम करते दोनों की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं स्थानीय लोगों ने ट्रक चालक को पकड़ लिया और पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया और ट्रक के साथ चालक को थाने ले गई। घटना की सूचना पर पहुंचे परिजनों का रो–रोकर बुरा हाल है। मेंहनगर थाना क्षेत्र के सपनहर गांव निवासी करन शर्मा (18) पुत्र भीमराज और रानी की सराय थाना क्षेत्र के वस्ती गांव निवासी प्रभात सरोज (16) पुत्र रामसमुझ हाईस्कूल के छात्र थे। रानी की सराय थाना क्षेत्र के शंकरपुर चेकपोस्ट के पास स्थित आजमगढ़ पब्लिक स्कूल में पढ़ते थे। शुक्रवार को दोनों बाइक से स्कूल प्रवेश पत्र लेने के लिए निकले थे। सुबह में करीब साढ़े ग्यारह बजे वह प्रवेश पत्र लेकर घर जा रहे थे। दोनों जैसे ही रानी की सराय थाना के पटेल नगर पहुंचे कि पीछे से आ रहे ट्रक ने बाइक में टक्कर मार दिया। जिससे बाइक पलट गई। गंभीर रूप से घायल दोनों छात्रों को लोग जब तक उपचार के लिए ले जाने की व्यवस्था करते मौके पर ही दोनों की मौत हो गई। घटना के बाद ट्रक चालक वाहन लेकर भागने लगा तो कुछ दूर जाकर लोगों ने उसे पकड़ लिया और पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने छात्रों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा और ट्रक को चालक के साथ पकड़कर थाने ले आई। सूचना पर परिवार के लोग मौके पर पहुंचे और पुलिस को तहरीर दी। उधर छात्रों के मौत की सूचना परिवार में पहुंचते ही कोहराम मच गया। मृतक करन शर्मा तीन भाईयों में सबसे बड़ा था। जबकि प्रभात सरोज दो भाई और एक बहन थे।

मानवाधिकार जनसेवा परिषद ने वैष्णव खण्ड के निवासियों की उठाई समस्या

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय लखनऊ – मानवाधिकार जनसेवा परिषद के अध्यक्ष रूप कुमार शर्मा ने वैष्णव खण्ड, गोमतीनगर विस्तार के निवासियों की समस्याओं को दूर करने के लिए लखनऊ विकास प्राधिकरण की जनता अदालत में पत्र देकर कार्यवाही की मांग की। वैष्णव खण्ड, सेक्टर 6, गोमतीनगर विस्तार में एल डी ए के प्लॉटों, सड़क पर अवैध कब्जे करके झोपड़ियों पर मकान बना लिए गए हैं तथा गांव का गंदा पानी भी सड़कों व खाली प्लॉटों पर भरा रहता है। इस सम्बन्ध में वैष्णव खण्ड की समिति ने माननीय मुख्यमंत्री, तत्कालीन उप मुख्यमंत्री दिनेश शर्मा, ब्रजेश पाठक, विजय विक्रम सिंह, ठाकुर रघुराज सिंह, तत्कालीन विधायक अविनाश त्रिवेदी के साथ मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश, उपाध्यक्ष, लखनऊ विकास प्राधिकरण को 2021 को पत्र लिखकर समस्याओं से अवगत कराया था तथा इस सम्बन्ध में मण्डलायुक्त, लखनऊ मण्डल, उपाध्यक्ष, लखनऊ विकास प्राधिकरण, जिलाधिकारी को कार्यवाही हेतु निर्देशित भी किया गया था परन्तु लखनऊ विकास प्राधिकरण के द्वारा कोई भी कार्यवाही नहीं की गई है जिसके कारण नागरिक नरक में जीवन जीने के लिए बाध्य हैं। टूटी–फूटी व गड्ढायुक्त सड़कें, सड़कों, खाली प्लॉटों पर गंदा पानी तथा बजबजाती नालियां क्षेत्र की पहचान बन चुका है। मानवाधिकार जनसेवा परिषद के अध्यक्ष रूप कुमार शर्मा ने बताया कि वैष्णव खण्ड की समस्याओं को दूर कराने के लिए हर सम्भव प्रयास जारी रहेगा।

महिला उद्यमियों को आगे बढ़ा रहा है एकेटीयू

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय लखनऊ। डॉ0 एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय नवाचार और उद्यमिता को गति दे रहा है। खासकर उद्यमिता के क्षेत्र में महिलाओं को आगे बढ़ाया जा रहा है। विश्वविद्यालय के इनोवेशन हब में पंजीकृत 40 स्टार्टअप में पांच महिला स्टार्टअप भी हैं। जो विभिन्न क्षेत्रों में अपने स्टार्टअप को आगे बढ़ा रही हैं। 5 महिला स्टार्टअप हैं रजिस्टर्ड एकेटीयू के इनोवेशन हब में पांच महिला स्टार्टअप पंजीकृत हैं। जिसमें दो महिलाएं स्टार्टअप की फाउंडर हैं जबकि तीन कोफाउंडर हैं। इन महिलाओं ने कुछ अलग करने के जज्बे के साथ स्टार्टअप की शुरूआत की है। इनमें एक ने रोबोटिक्स तो दूसरे ने सर्विस पर स्टार्टअप को शुरू किया है। इनका कहना है कि नौकरी तो हर कोई करना चाहता है मगर सही मायने में स्टार्टअप से ही भविष्य संवरेगा और देश की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी। आपको बता दें महिला स्टार्टअप को सरकार की ओर से 50 प्रतिशत अधिक वित्तीय सहायता दी जाती है। जिससे कि महिलाएं स्टार्टअप के लिए आगे आयें। इनोवेशन हब कर रहा सहयोग एकेटीयू का इनोवेशन हब न केवल अपने यहां के पंजीकृत स्टार्टअप को आगे बढ़ा रहा है बल्कि 14 राजकीय इन्क्युबेशन सेंटर के करीब 200 स्टार्टअप की भी मदद कर रहा है। यहां पंजीकृत स्टार्टअप को न केवल आर्थिक मदद की जाती है बल्कि जगह मुहैया कराने के साथ ही विशेषज्ञों का मार्गदर्शन भी दिया जाता है। जिससे कि स्टार्टअप सफल हो सकें। कुलपति प्रो0 आलोक कुमार राय के निर्देशन में हाल ही में इनोवेशन हब की ओर से इन्वेंस्टर समिट में स्टार्टअप की प्रदर्शनी लगायी गयी थी। जिसमें स्टार्टअप को काफी सराहना मिली। इनोवेशन हब के हेड महीप सिंह का कहना है कि महिला उद्यमियों के लिए समय–समय पर सफल महिला उद्यमियों का सत्र आयोजित किया जाता है। जिसमें वो अपने अनुभव को साझा करती हैं।

जनपद को टेक होम राशन सेंटर के लिए मिले चार करोड़

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) जनपद में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को पोषाहार उत्पादन के लिए टेक होम राशन सेंटर खोलवाकर रोजगार उपलब्ध कराने में आड़े आ रही धन की कमी को शासन ने दूर कर दिया है। विशेष सचिव ने जिले को करीब चार करोड़ रुपये का बजट जारी किया है। इससे जिले में बन रहे टीएचआर सेंटरों पर सामग्री की खरीद कर उत्पादन शुरू होगा। आंगनबाड़ी केंद्रों पर आपूर्ति कर महिलाएं रोजगार से जुड़ेंगी। जिले के आठ ब्लॉकों में टेक होम राशन उत्पादन के सेंटर खोलने की कवायद शुरू की गई थी। इसमें से सिर्फ दो सेंटर बीकापुर व सोहावल ब्लॉक का कार्य पूरा हो चुका था। भवन किराए पर लेकर मशीनों की खरीद हो चुकी है। अन्य छह सेंटरों में पूराबाजार , मिल्कीपुर, रुदौली, मवई, मया बाजार व अमानीगंज में कार्य अधूरा था।बजट न होने के कारण मशीनों की खरीद व अन्य कार्य अधूरे पड़े थे। सीडीओ द्वारा शासन को पत्र लिखकर बजट मांगा था। जिसके क्रम में विशेष सचिव संदीप कौर ने चार करोड़ रुपये का बजट जारी किया है। मुख्य विकास अधिकारी अनीता यादव ने बताया कि अब कार्य में गति आयेगी। टीएचआर प्लांट में लाभार्थियों के हिसाब से अलग अलग टेक होम राशन तैयार होगा। गाइडलाइंस के अनुसार रेसिपी बेस्ड अनुपूरक पुष्टाहार तैयार होगा। इसमें छह माह से तीन साल के बच्चों के लिए आटा बेसन हलवा, तीन से छह वर्ष तक के बच्चों के लिए आटा, बेसन, बर्फी प्रीमिक्स, दलिया, मूंगदाल, खिचड़ी। गर्भवती व धात्री महिलाओं के लिए भी यही तैयार होगा। अति कुपोषित बच्चों के लिए हलवा बनेगा।

बेसिक विद्यालय के सभी बच्चो के लिए होगा स्काउट प्रशिक्षण

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) बेसिक शिक्षा के सभी विद्यालयों में अब स्काउटिंग का प्रशिक्षण न्याय पंचायत स्तर पर कराया जाएगा। जिससे सभी बच्चों में देश प्रेम और अनुशासन की भावना का विकास हो सके । उक्त विचार कम्पोजिट विद्यालय अंगूरी बाग में ब्लॉक स्काउट मास्टर गाइड कैप्टन कार्यशाला में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी संतोष कुमार राय ने व्यक्त किए। कार्यशाला में 12 विकास खंडों से आए हुए ब्लॉक स्काउट मास्टर ब्लॉक गाइड कैप्टन को स्काउटिंग की बारीकियों एवं विभागीय निर्देशों हेतु प्रशिक्षित किया गया। इस अवसर पर बीएससी ज्ञान प्रतियोगिता में बेसिक शिक्षा विभाग के 170 प्रतिभागी बच्चों के लिए मॉडल पेपर पुस्तिका के रूप में विभाग द्वारा जारी की जाएगी। कार्यशाला में बीएसए श्री राय का स्वागत जिला स्काउट मास्टर अनूप मलहोत्रा, गाइड कैप्टन निधि महेंद्रा ने बुके प्रदान कर किया। इस अवसर पर नगर स्काउट मास्टर दीप सहाय ने स्कार्फ और वागल पहना कर स्काउट बिरादरी में उन्हें शामिल किया। श्री राय ने नगर गाइड कैप्टन शिप्रा श्रीवास्तव एवं ब्लॉक गाइड कैप्टन तारुन सौम्या गुप्ता को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। कार्यशाला में गीता गुप्ता ,दुर्गेश कुमार ,डिंपल साहू ,ललित कुमार, पुनीता, रेनू सिंह, महमूद अहमद, भावना गुप्ता, बरसाती राही ,वंदना यादव,अर्चना, रवि कुमार कनौजिय, गीता राना, प्रवेश कुमार आदि मौजूद रहे। प्रधानाध्यापक तहसीन बानो ने सभी के प्रति धन्यवाद व्यक्त किया।

प्राइवेट कंपनी के एजेंट ने घर में घुस पति के रहते पत्नी को घसीट कर की बदसलूकी : संदेह के घेरे में अहिरौली पुलिस की कार्यवाही

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) प्राइवेट फाइनेंस कंपनी के एजेंट की दबंगई के आगे अहिरौली थाने की पुलिस बौनी दिखी। और अपराधी को संरक्षण देते हुए पीड़िता के खिलाफ उच्चाधिकारियों के निर्देश को धता बताते हुए शांति भंग में चालान करके मामले की इत्तिश्री कर दी। पीड़िता ममता के अनुसार घटना 22 नवंबर को बेल स्टार माइक्रो फाइनेंस कंपनी अकबरपुर अंबेडकर नगर के एजेंट शशिकांत यादव 24 नवंबर 2022 को उसके कटेगरी बाजार स्थित घर मे जबरन घुसकर उसके पति संगम लाल के सामने ही उसका हाथ पकड़ कर घ्घचास हजार के कंपनी से लिए ऋण की किस्त समय से ना अदा करने पर नाराजगी दिखाते हुए हाथ पकड कर ले जाने लगा जब पीड़िता के पति संगम लाल ने विरोध किया तो उसे मां बहन की भद्दी भद्दी गालियां देते हुए मारापीट हल्ला गुहार पर पड़ोसियों के आ जाने पर जान से मार डालने की धमकी देते हुए कंपनी का एजेंट भाग गया। अहिरौली थाने की पुलिस को लिखित शिकायत देने के बाद भी इस मामले में कोई कार्यवाही नहीं करने पर पुलिस के अधिकारियों को एक दिसंबर को शिकायती पत्र देने पर कार्रवाई का निर्देश दिया गया था जिस पर पुलिस ने 151 की कार्रवाई करके मामले को ठंडे बस्ते मे डाल दिया। जिससे अपराधी का मन काफी बढ़ गया है और वह पीडिता और उसके पति को शिकायत करने पर गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी दे रहा है। जिससे पूरा परिवार सदमे में है अहिरौली पुलिस से दूरभाष पर वार्ता करने का प्रयास किया गया फोन ना उसने पर मामले का पक्ष नहीं जाना जा सका है।

डॉ एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय के 13 छात्रों का हुआ कैंपस प्लेसमेंट

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय लखनऊ। डॉ एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय के ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट विभाग की ओर से आयोजित कैंपस प्लेसमेंट में 13 इ जमबी छात्रों का चयन मल्टीनेशनल कंपनी में हुआ है। ब्लू एनालिस्ट के पद पर चयनित इन छात्रों को इन छात्रों को 2 लाख 40 हजार रुपये सालाना का पैकेज मिलेगा। फार्मूलिक इंजिनियर्स प्राइवेट लिमिटेड चयनित इन छात्रों को कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार राय ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

एक दिवसीय कार्यशाला में शिल्पियों ने सीखा हुनर में प्रगाढ़ता लाने का तरीका

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : कार्यालय विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) वस्त्र मंत्रालय भारत सरकार तथा ठाकुरबाड़ी महिला विकास कल्याण समिति की ओर से गुरुवार को सिंगरामऊ में एक दिवसीय कार्यशाला/सेमिनार का आयोजन हुआ। इसमें लोगों को अपना रोजगार शुरू करने, विभिन्न उद्योगों को आगे बढ़ाने, आत्मनिर्भर बनने तथा हुनर में प्रगाढ़ता लाने के लिए आवश्यक बुनियादी जानकारियां दी गईं। इसमें लोगों को जीआई, जीएसटी, ई–कामर्स आदि के बारे में बताया गया तथा अपने सामान की पहुंच आम लोगों तक बनाने वाले प्लेटफार्म की जानकारी दी गई। कार्यक्रम की शुरुआत में ठाकुरबाड़ी महिला विकास कल्याण समिति संचालक डॉ अंजू सिंह ने समिति के माध्यम से बनाए गए उत्पादों से अतिथियों को परिचित कराया तथा उसकी विशेषता बताई। मुख्य अतिथि एचपीओ विनय कुमार सिंह ने योजना का फायदा उठाने के लिए सभी शिल्पियों के पास शिल्पी कार्ड होना जरूरी बताया। उन्होंने कहा कि कोविड के कारण दो वर्षों से लोग एक–दूसरे के पास बहुत कम जाना चाहते हैं। बच्चों की कक्षाएं भी आनलाइन ज्यादा पसंद की जा रही हैं। ऐसे में हमें अपने रोजगार को आनलाइन आमलोगों तक पहुंचाने का प्रयास करना चाहिए। ई–कामर्स वह प्लेटफॉर्म है जिसके माध्यम से लोगों तक अपने उत्पाद को पहुंचाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि हस्तशिल्पियों को आगे बढ़ाने के लिए उनका पहचान कार्ड शिल्पी कार्ड बनवाना जरूरी है। यह कार्ड बन जाने पर केंद्र और प्रदेश सरकार की योजनाओं का लाभ उठा सकते हैं। दो लाख रुपए तक का लोन लेकर अपने रोजगार को आगे बढ़ा सकते हैं। अच्छे कार्य के लिए प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के हाथों राष्ट्रीय पुरस्कार तथा मुख्यमंत्री और राज्यपाल के हाथों राज्य पुरस्कार प्राप्त कर सकते हैं। वहीं स्कीम आफ हैंडीक्राफ्ट के डिजाइनर मोनू मौर्या ने कहा कि आपके कपड़े में डिजाइन और कलर महत्वपूर्ण होता है। डिजाइन की कोई परिभाषा नहीं है। किसी की नकल नहीं करनी चाहिए। हमेशा कुछ अलग डिजाइन

बनाने का प्रयास करना चाहिए जिससे बाजार में आपके उत्पाद की कुछ अलग पहचान बन सके। आपका डिजाइन एक बिन्दु हो सकता है, लाइनें हो सकती हैं लेकिन जो भी डिजाइन हो, उसमें कुछ नवीनता होनी चाहिए। आपकी डिजाइन अलग होने पर आपको काम मिलेगा। उन्होंने बताया कि बरेली की पहचान जरी–जरदोजी से है। शाहजहांपुर, उन्नाव, लखनऊ और जौनपुर की भी इस क्षेत्र में पहचान है। अवकाश प्राप्त सीटीओ एमआई खान ने कहा कि जरी जरदोजी ही महिलाओं के सशक्तिकरण का सबसे अच्छा क्षेत्र है। उन्होंने कहा कि जिनके पास शिल्पी कार्ड है वहीं भारत सरकार की ओर से मान्यता प्राप्त शिल्पी हैं। ऐसे लोगों के बच्चों की पढ़ाई के लिए सरकार की ओर से सुविधाएं मिलती हैं। 60 वर्ष की उम्र पूरी करने पर वह कई अन्य तरह की सुविधाओं के हकदार हो जाते हैं। उन्होंने जमी अख्तर नामकी महिला के हाथों बने जरी के काम की प्रशंसा की। उन्होंने कहा ऐसी कलाओं की बहुत ही मांग है। ऐसे सामान बेचने के लिए ई कामर्स प्लेट फार्म पर डाल देना चाहिए। उन्होंने मूंज की डलिया, सजर स्टोन की कारीगरी आदि के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने उत्पादों को बिक्री के लिए ठाकुरबाड़ी महिला विकास कल्याण समिति तथा विभाग के दफ्तर के माध्यम से भी लोगों तक पहुंचाने के बारे में जानकारी दी। अजय तिवारी ने जियोग्राफिकल इंडीकेशन (जीआई) के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि जब भी आप कोई चीज अलग बनाएं जिससे क्षेत्र की पहचान हो तब उसे टैग मिलेगा। उन्होंने जौनपुर की इमरती और मूली को इसका उदाहरण बताया। इस दौरान शिव दूबे ने जीएसटी के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि एक वर्ष के दौरान 40 लाख रुपए तक की खरीद और बिक्री करने पर आप जीएसटी के दायरे में नहीं आते हैं। लाभ होने पर ही टैक्स देना पड़ता है कार्यशाला को राष्ट्रीय हिन्दू भगवा पार्टी की प्रदेश अध्यक्ष अंजना सिंह, एनसीटी टीएलएम सदस्य यामिनी सिंह, प्रधानाध्यापिका संध्या सिंह ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया।

बोर्ड परीक्षा में अच्छी लिखावट पर मिलेगा अतिरिक्त अंक

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) यूपी बोर्ड 2023 की परीक्षाएं आज से शुरू हो गई है। परीक्षार्थी प्रश्नों के सटीक उत्तर देने के साथ ही सुंदर हैंडराइटिंग का भी ध्यान रखेंगे तो परिणाम और बेहतर होंगे। जिन परीक्षार्थियों का सुंदर हस्तलेख होगा उन्हें परीक्षा में मिले अंक से एक अतिरिक्त अंक प्रदान किए जाएंगे। इस बाबत माध्यमिक शिक्षा परिषद की ओर से आवश्यक दिशा निर्देश जारी कर दिए गए हैं। पहली बार बोर्ड परीक्षा में 20 अंकों की परीक्षा ओएमआर शीट पर होगी। उत्तर पुस्तिकाओं पर क्यूआर कोड एवं बोर्ड का लोगो भी मुद्रित किया गया है।इसके लिए प्रदेश में कुल 8753 केंद्र बनाए गए हैं। इन केंद्रों पर 10वीं और 12वीं के 58 लाख से अधिक परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। 242 परीक्षा केंद्रों को अतिसंवेदनशील और 936 को संवेदनशील श्रेणी में रखा गया है। हाईस्कूल की परीक्षा 12 और इंटर की परीक्षा 14 कार्यदिवसों में पूरी होगी।

874 जोड़ों का सामूहिक विवाह योजना सम्पन्न –डी0एम0 हरदोई

हरदोई ब्यूरो अम्बरीष कुमार सक्सेना : आज सीएसएन डिग्री कालेज के प्रागंण में जिला प्रशासन की ओर से आयोजित मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह में मुख्य अतिथि मा0 राज्यमंत्री आबकारी एवं मद्यनिषेध श्री नितिन अग्रवाल की उपस्थिति में गणेश पूजन एवं दीप प्रज्जलन के साथ 802 हिन्दू तथा 72 मुस्लिम गरीब कन्याओं का विवाह विधि विधान के साथ सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर मा0 मंत्री जी ने मुख्यमंत्री विवाह के अन्तर्गत दी जाने वाले 35 हजार रू0 की धनराशि लैपटाप पर क्लिक कर सीधे लाभार्थियों के खाते

में स्थानान्तरित की। कार्यक्रम में नव विवाहित कुल 874 जोड़ों को आर्शीवाद प्रदान करते हुए मा0 मंत्री जी ने कहा कि आप सभी का वैवाहिक जीवन सफल एवं खुशहाल रहे। उन्होने कहा कि मा0 मुख्यमंत्री जी की महत्वाकांक्षी योजना के अन्तर्गत आज इस भव्य कार्यक्रम मे गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले असहाय, निराश्रित लोगों का विवाह सम्पन्न कराया गया है। कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष मा0 प्रेमावती ने नव विवाहित जोड़ों को आर्शीवाद देते हुए कहा कि सभी का गहस्थ जीवन खुशमय हो और सभी अपने वैवाहिक जीवन में सफलता पायें। मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह में जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह ने मा0 मंत्री, जिला पंचायत अध्यक्ष सहित सभी अतिथियों का एवं नव विवाहित जोड़ों उनके परिजनों का धन्यवाद ज्ञापित किया तथा नव विवाहित जोड़ों को आर्शीवाद देते हुए कहा कि उनका वैवाहिक जीवन मंगलमय हो और उन्हें जीवन में सभी खुशियां प्राप्त हो। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने बताया कि आज जनपद में सीएसएन डिग्री कालेज प्रागंण मे सभी 19 विकास खण्डों एवं नगर निकायों को मिलाकर कुल 874 जोड़ों का मुख्यमंत्री सामूहिक योजना के अन्तर्गत विवाह सम्पन्न कराया गया है, और शासन के निर्देशानुसार प्रत्येक लाभार्थी के खाते में 35 हजार रू0 नगर की धनराशि भेजने के साथ निर्धारित वैवाहिक सामग्री व उपहार उपलब्ध कराए गये है। कार्यक्रम में मा0 मंत्री जी सहित सभी अतिथियों ने नव विवाहित जोड़ों पर पुष्प वर्षा कर आर्शीवाद दिया। मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह कार्यक्रम में भाजपा जिलाध्यक्ष सौरभ मिश्र, अवध क्षेत्र के मंत्री पीके वर्मा, मा0 विधायक सवायजपुर माधवेन्द्र प्रताप सिहं रानू, ब्लाव प्रमुख गण, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष सुखसागर मिश्र, भाजपा महिला मोर्चा की अध्यक्ष अलका गुप्ता, पुलिस अधीक्षक राजेश द्विवेदी, नगर मजिस्ट्रेट प्रशान्त तिवारी, जिला सूचना अधिकारी संतोष कुमार, जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी राम प्रकाश वर्मा, जिला समाज कल्याण अधिकारी राजमती, सहित सभी विकास खण्डों के खण्ड विकास अधिकारी तथा भारी संख्या में नव वैवाहिक जोड़ों के परिजन आदि उपस्थित रहें। सामूहिक विवाह कार्यक्रम के अन्तर्गत हिन्दू जोंडों का विवाह गायत्री पीठ के पुजारियों द्वारा सम्पन्न करया गया तथा मुस्लिम जोंडों का निकाह काजियों द्वारा पढा गया। कार्यक्रम मे स्काउट मास्टर पंकज वर्मा की टीम द्वारा मनमोहक रंगोली तैयार की गयी। कार्यक्रम का सफल संचालन मनीष मिश्रा द्वारा किया गया।

ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट–2023 में जनपद में लगभग 98 सौ करोड़ के निवेश विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त हुए–दिनेश प्रताप सिंह

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार), उद्यान, कृषि विपणन, कृषि विदेश व्यापार एवं कृषि निर्यात, उत्तर प्रदेश दिनेश प्रताप सिंह द्वारा कलेक्ट्रेट सभागार में गुरुवार शाम जनप्रतिनिधियों के साथ जिला प्रशासन/पुलिस प्रशासन, विकास विभाग, जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ विकास परख योजनाओं की समीक्षा बैठक किया। राज्यमंत्री द्वारा 50 लाख के ऊपर के स्वीकृत परियोजनाओं की समीक्षा करते हुए निर्देश दिया कि किसी भी कार्यदायी संस्था द्वारा अगर कार्य में लापरवाही बरती जा रही है तो उन्हें ब्लैक लिस्टेड करते हुए एफ0आई0आर0 दर्ज करायी जाये। उन्होंने कार्यदायी संस्था को निर्देशित किया कि किये जाने वाले कार्य की विस्तृत जानकारी आमजनमानस को डिस्पले कर दे और जिलाधिकारी को निर्देशित किया कि कार्यदायी संस्थाओं की सूची बनाये और खराब प्रदर्शन करने वालों के खिलाफ कठोर कार्यवाही करें। इस दौरान मंत्री द्वारा नगर में चल रही विभिन्न परियोजनाओं का निरक्षण किया ।जिसमे सीवरेज योजना अमृत, जौनपुर नगर पालिका परिषद में आईएंडडी एवं सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट के कार्यों, जल निगम निर्माण खंड के कार्यों, उत्तर प्रदेश राज्य सेतु निगम लिमिटेड के कार्यों, बदलापुर में राजकीय आईटीआई का निर्माण कार्य, जल जीवन मिशन ग्रामीण, पशुपालन एवं गोवंश आश्रय स्थल, स्वास्थ्य केंद्र, धान क्रय केंद्र 2022–23, पीएम किसान सम्मान निधि योजना, आधार सीडिंग, खाद की उपलब्धता, कृषक उत्पादक संगठन, उद्यान विभाग, सिंचाई खंड , विद्युत आपूर्ति, झटपट पोर्टल पर प्राप्त लंबित आवेदनों का निस्तारण, फोर लेन, दो लेन सड़कों को जोड़ने की स्थिति, नई सड़कों का निर्माण, चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण सड़कों को गड्ढा मुक्त अभियान की स्थिति, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, औद्योगिक विकास हेतु कार्य, विश्वविद्यालय में इक्यूवेशन सेंटर की स्थापना, उद्योग बंधु एवं उद्यमियों की समस्याओं का निस्तारण, खाद्य तथा रसद विभाग, आपूर्ति शाखा, माननीय मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना, दिव्यांगजन शादी अनुदान, पेंशन योजना, छात्रवृत्ति योजना, उत्तर प्रदेश मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना, कन्या सुमंगला योजना, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना, स्वामित्व योजना के अंतर्गत आबादी सर्वेक्षण एवं घरौली वितरण की अद्यतन, उत्तर प्रदेश कौशल मिशन प्रगति विवरण, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना, रोजगार मेले का आयोजन, असंगठित मजदूरों के लिए बीमा, मुख्यमंत्री दुर्घटना बीमा योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी, पीएम स्वनिधि योजना, स्वच्छ भारत मिशन नगरी, सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट, नगर पालिका परिषद जौनपुर में पीपीपी मॉडल पर चौराहों का निर्माण एवं सुंदरीकरण, प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण के अंतर्गत प्रगति, मुख्यमंत्री आवास योजना ग्रामीण के अंतर्गत प्रगति, महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार ग्रामीण योजना, मिनी ग्रामीण स्टेडियम, मॉडल तालाब, अमृत सरोवर, आईसीडीएस पोषण अभियान, आंगनबाड़ी केंद्र और पोषाहार वितरण, आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना गोल्डन कार्ड, मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना गोल्डन कार्ड, अंत्योदय कार्ड गोल्डन कार्ड, पंजीकृत श्रमिकों का गोल्डन कार्ड, हेल्थ एवं वैलनेस सेंटर, स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण योजना अंतर्गत सामुदायिक

शौचालय का निर्माण, ग्रामीण सचिवालय निर्माण सहित विभिन्न योजनाओं की विस्तृत समीक्षा किया। जल निगम के पेयजल पुर्नगठन की परियोंजनाओं की प्रगति की जानकारी प्राप्त की। कार्य की धीमी प्रगति पर नाराजगी व्यक्त करते हुए जिलाधिकारी को निर्देशित किया कि जांचकर अवगत कराएं और कनेक्शन देने की गति बढ़ाने के साथ ही कार्य की गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाए। जल जीवन मिशन के अंतर्गत जिलाधिकारी ने अवगत कराया कि गांव चयनित करते हुए डीपीआर तैयार करा लिया गया है, कार्यदाई संस्था वेलस्पन, एफकॉन द्वारा कार्य किया जा रहा है, प्रतिदिन लगभग 700 से 800 कनेक्शन दिए जा रहे हैं जिस पर राज्यमंत्री ने एक्सईएन जल निगम को निर्देशित किया कि 2024 तक हर घर नल देने की योजना है अतः कार्य की गति और गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए कार्य संपन्न कराएं। पशुपालन और गो–आश्रय की समीक्षा करते हुए मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी को निर्देशित किया कि निराश्रित गोवंश के हरे चारे के लिए वन विभाग से समन्वय स्थापित करते हुए पौधारोपण करा लें जिससे गर्मी के मौसम में पशुओं को हरा चारा प्राप्त हो सके। उन्होंने मुख्य पशु चिकित्साधिकारी को गोवंश के लिए गो अभ्यारण्य बनाने के लिए स्थान चिह्नित करते हुए अभ्यारण्य में गोवंश के टहलने, चारे–पानी की पर्याप्त व्यवस्था की जाये। उन्होंने मुख्य पशुचिकित्साधिकारी से जानकारी प्राप्त की कि कितने गोशालाओं के चारे का भुगतान लम्बित है। स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा के दौरान आयुष्मान कार्ड बनाने की गति को बढ़ाने के निर्देश मुख्य पशुचिकित्साधिकारी को दिया और निर्माणधीन हेल्थ एण्ड वेलनेस सेन्टर को कियात्मक रुप देने के निर्देश दिये और कहा कि सेंटर पर समस्त आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। कौशल विकास की समीक्षा के दौरान सेवायोजन अधिकारी को निर्देशित किया कि कौशल विकास के अन्तर्गत स्कूलों में कैम्प लगाकर बच्चों को प्रशिक्षित करते हुए रोजगार उपलब्ध कराये, जिससे आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार किया जा सके। कानून व्यवस्था की समीक्षा के दौरान पुलिस अधीक्षक को निर्देशित किया कि जनपद अपराध मुक्त बनाये। महिला और बच्चों से संबंधित अपराध में शीघ्र सजा दिलाये। जिलाधिकारी को निर्देशित किया कि समस्त तहसीलों और कार्यालयों का निरीक्षण कर सम्बन्धित को साफ–सफाई के लिए निर्देशित करे जिससे की स्वच्छ भारत अभियान के सपने को साकार किया जा सके। बैठक में यू0पी0 ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट–2023 पर आधारित लघु फिल्म को दिखाया गया। मंत्री ने कहा कि यू0पी0 ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट–2023 में जनपद में लगभग 98 सौ करोड़ के निवेश विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त हुए है। उन्होंने कहा कि निवेशकों के लिए शासन प्रसाशन लगातार प्रयारत है और उनकी आवश्यकता के अनुसार जो भी जरुरते होगी तत्काल उपलब्ध करायी जायेगी। उन्होंने कहा कि भारत सरकार सहित उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाओं की व्यापक प्रचार–प्रसार/जागरुकता करना सुनिश्चित करें जिससे अधिक से अधिक पात्र लाभार्थियों को योजना का लाभ उपलब्ध हो सके।

सत्ता में वापसी के बाद हमारी सरकार कायस्थों के उत्थान के लिए तमाम कदम उठाएगी –रीबू श्रीवास्तव

जौनपुर ब्यूरो विश्वप्रकाश श्रीवास्तव : एक निजी कार्यक्रम में जौनपुर पहुची समाजवादी पार्टी की महिला प्रदेश अध्यक्ष रीबू श्रीवास्तव ने अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ इन्द्रसेन श्रीवास्तव के आवस पर औपचारिक मुलाकात किया।इस मौके पर दर्जनों कायस्थ जनों ने माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया। अपने स्वागत से अभिभूत महिला प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि समय–समय पर समाज वादी पार्टी कायस्था समाज के हितों के लिए पार्टी ने ठोस कदम उठाया है। सत्ता में वापसी के बाद हमारी सरकार ने कायस्थों के उत्थान के लिए तमाम तरह की योजनाएं बना रखी है जिसका पूरे कायस्थ समाज को मिलेगा। इस अवसर पर प्रमुख रूप से काश महासभा के राष्ट्रीय सचिव रवि श्रीवास्तव वरिष्ठ अधिवक्ता जिलाध्यक्ष नीलमणि श्रीवास्तव प्रदेश प्रदेश सचिव राकेश श्रीवास्तव साधु प्रदेश सचिव प्रदेश प्रवक्ता

विश्व प्रकाश श्रीवास्तव पत्रकार समाजवादी पार्टी के नेता अजय श्रीवास्तव कायस्थ महासभा के संरक्षक आनंद मोहन श्रीवास्तव सुभाष श्रीवास्तव सहित तमाम कायस्थ जन उपस्थित रहे।

महाशिवरात्रि पर्व के दृष्टिगत त्रिलोचन महादेव मंदिर का किया गया निरीक्षण

जौनपुर सू.वि. : महाशिवरात्रि का पर्व 18 फरवरी, 2023 को मनाया जायेगा। उक्त के दृष्टिगत जिला मजिस्ट्रेट मनीष कुमार वर्मा, पुलिस अधीक्षक अजय पाल शर्मा द्वारा त्रिलोचन महादेव मंदिर का निरीक्षण किया। प्रबंधक त्रिलोचन महादेव मुरलीधर गिरी द्वारा जिलाधिकारी को अवगत कराया गया कि इस मेले में लगभग 50 हजार से एक लाख श्रद्धालुओं की भीड़ की संभावना है, ज्यादातर दोपहर 12 बजे के बाद श्रद्धालु आते है, जिसपर

जिलाधिकारी ने प्रबंधक को कहा कि आप अपने वालंटियर लगाते हुए श्रद्धालुओं को सुव्यवस्थित ढंग से दर्शन कराए। जिलाधिकारी ने उप जिलाधिकारी केराकत सुश्री नेहा मिश्रा को निर्देशित किया कि प्रदर्शनी में लगाये गए झूले का पी०डब्ल्यू०डी०/ इलेक्ट्रिशियन द्वारा जांच करा लिया जाए और बी०डी०ओ० को निर्देशित किया कि पूरे परिसर की साफ–सफाई करा ली जाए। जिलाधिकारी द्वारा सीसीटीवी कक्ष का निरीक्षण करते हुए आस पास के सुरक्षा को देखते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिए। पुलिस अधीक्षक ने सी०ओ० केराकत गौरव कुमार को निर्देश दिया कि पर्याप्त पुलिस व्यवस्था करते हुए श्रद्धालुओं को दर्शन कराया जाए,किसी प्रकार की असुविधा न उत्पन्न होने पाए। जिलाधिकारी ने कहा कि यह त्यौहार हिन्दू श्रद्धालुओं/कॉवरियों द्वारा गंगा सहित प्रदेश के विभिन्न नदियों/सरोवरों से पवित्र जल लेकर शिव मन्दिरों/शिवालयों में जलाभिषेक कर पूजा–अर्चना की जाती है। इस दौरान कुछ शिव मन्दिरों पर मेले भी लगते है,जिसको देखते हुए सुरक्षा की पर्याप्त व्यवस्था की गई है। उन्होंने कहा कि जनपद जौनपुर के प्रमुख मंदिरों यथा त्रिलोचन महादेव मंदिर थाना जलालपुर, श्री गौरी शंकर मंदिर थाना सुजानगंज, साहिनाथ मंदिर थाना क्षेत्र बक्सा एवं दियांवा महादेव मंदिर थाना क्षेत्र मछलीशहर में अधिक संख्या में श्रद्धालुओं द्वारा जलाभिषेक तथा विशेष पूजा अर्चना की जाती है। उक्त मंदिरों पर मजिस्ट्रेटो की भी तैनाती की गयी है।

स्वामी प्रसाद के बयान को लेकर सपा में असमंजस : बीच का रास्ता निकालने में जुटी पार्टी

लखनऊ ब्यूरो : रामचरित मानस की चौपाई को लेकर उठे तूफान के बीच सपा में असमंजस की स्थिति है। पार्टी स्वामी प्रसाद के बयान को उनकी निजी बयान बताते हुए बीच का रास्ता निकाल रही है। बृहस्पतिवार को पार्टी के राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव प्रो रामगोपाल यादव ने कहा कि पार्टी में हर तरह के लोग होते हैं। कुछ टेढ़े मेढ़े होते हैं। सभी को साथ लेकर चलना पड़ता है। उनका यह बयान कई तरह के अर्थ लगाए जा रहे हैं। दूसरी तरफ स्वामी प्रसाद मौर्य ने खुद की हत्या कराए जाने की आशंका जाहिर की है। रामचरित मानस की चौपाई को लेकर आए स्वामी प्रसाद मौर्य के बयान से सपा दो राहे पर खड़ी नजर आ रही है। राष्ट्रीय महासचिव शिवपाल सिंह यादव ने स्वामी प्रसाद के बयान को उनका निजी बयान बताते हुए पल्ला झाड़ा तो पार्टी केविधायकों में खेमेबंदी शुरू हो गई। विधायक तूफानी सरोज ने स्वामी प्रसाद का समर्थन किया तो डा. मनोज पांडेय, राकेश प्रताप सिंह ने खुले तौर पर विरोध जताया। बृहस्पतिवार को इटावा में राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव प्रो रामगोपाल यादव ने एक सवाल के जवाब में कहा कि कुछ पार्टी वास्तव में इतनी शक्तिशाली होती है, जहां आदमी मुंह नहीं खोल सकता। लेकिन, कुछ राजनीतिक पार्टियां भोले शंकर की बारात की तरह होती हैं, जहां कुछ अच्छे कुछ टेढ़े मेढ़े लोग होते हैं। सबको साथ लेकर चलना होता है। पता नही कौन कहां काम आ जाए। उनके इस बयान को बीच का रास्ता निकाल कर चलने के तौर पर देखा जा रहा है। दूसरी तरफ राष्ट्रीय सचिव एवं मुख्य प्रवक्ता राजेंद्र चौधरी ने कहा है कि पार्टी कार्यकर्ताओं एवं मीडिया पैनलिस्टों से सांप्रदायिक मुद्दों पर बहस से परहेज करने की सलाह दी गई है। कहा

कि राजनीतिक चर्चा और बुनियादी सवालों पर ही अपना पूरा ध्यान रखना है। धार्मिक मुद्दा संवेदनशील मुद्दा है। हमें अनायास उससे संबंधित बहसों में नहीं उलझना चाहिए। योगी के कहने पर नहीं होगा हिंदू राष्ट्र– रामगोपाल सपा के राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव रामगोपाल यादव ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के हिंदू राष्ट्र पर दिए गए बयान पर कहा कि सीएम योगी के कहने पर हिंदू राष्ट्र नहीं होगा। जैसा पहले है वैसा रहेगा। सबको साथ लेकर चलना होगा। भारत हिंदू राष्ट्र न तो योगी की वजह से है। ना इनकी वजह से रहेगा, जैसा हमेशा रहा है, वैसा ही रहेगा। यह लोग धर्म से विकृति पैदा कर रहे हैं। कानपुर देहात मामले में हो सख्त कार्रवाई उन्होंने कानपुर देहात की घटना को निंदनीय और दर्दनाक है बताते हुए कहा कि इस प्रकरण के जिम्मेदार अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। अब्दुल्लाह आजम की विधानसभा की सदस्यता निरस्त होने के सवाल पर कहा कि कानून ऐसा है जिसमें दो साल की सजा हो जाती है तो उसकी सदस्यता चली जाएगी। उम्मीद है उच्च न्यायालय में यह मामला कहीं नहीं ठहरेगा। उन्होंने ग्लोबल समिट पर कहा कि पहले भी इस तरह की समिट हुई थी। लेकिन वह कहीं दिखता नहीं है।

बिना हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट के अभाव में वाहन चालकों पर आरटीओ यातायात व पुलिस विभाग करेगी कारवाही

अयोध्या।(डाक्टर अजय तिवारी जिला संवाददाता)बिना हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट के दो पहिया व चार पहिया वाहन का उपयोग करने वाले वाहन चालकों पर परिवहन विभाग, यातायात विभाग के साथ साथ पुलिस प्रशासन शिकंजा कसने जा रही है।इस बात की जानकारी देते हुए यातायात विभाग, पुलिस विभाग व पुलिस विभाग के अधिकारियों ने बताया कि शीघ्र ही उन वाहन चालकों के खिलाफ कार्यवाही की जाएगी जिनके वाहनों पर सिक्योरिटी नंबर नहीं पायी जायेगा। इस संबंध में एआरटीओ आर पी सिंह ने बताया कि इससे पहले कई बार वाहन चालकों को समय देकर संबंधित विभाग द्वारा सिक्योरिटी नंबर प्लेट लगाने की बात करती रही। परन्तु 15 फरवरी को अंतिम तिथि खत्म हो गई।अब आरटीओ विभाग इन वाहनों पर कारवाई करने की मन बना चुकी है। अगर कोई भी वाहन बिना सिक्योरिटी नंबर प्लेट के सड़क पर मिलता है तो उसके विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जाएगी। वही सीओ यातायात प्रमोद कुमार यादव ने बताया कि शीघ्र ही यातायात विभाग जिन वाहनों में सिक्योरिटी नंबर प्लेट का अभाव रहता है तो यातायात विभाग के कर्मी उनके वाहनों का चालान करेगी।वही सीओ सिटी शैलेंद्र सिंह ने बताया कि शीघ्र ही यह अभियान पुलिस कर्मियों द्वारा चलाया जाएगा। उन्होंने बताया कि पुलिस उच्चाधिकारियों के माध्यम से कोतवाली नगर, थाना कैंट क्षेत्र में संबंधित थाना प्रभारी निरीक्षक व सभी चौकी प्रभारी अपने–अपने क्षेत्रों में इन वाहन चालकों के विरुद्ध चेकिंग अभियान चलाएंगे। उन्होंने बताया कि पहले बिना सिक्योरिटी नंबर प्लेट के वाहन चालक आपराधिक घटनाओं को अंजाम देकर आराम से निकल जाते थे। काफी मस्कत के बाद पुलिस इन अपराधियों तक पहुंचती थीं।पेंट से अंकित नंबर सीसीटीवी कैमरे उसे ट्रेस नहीं कर पाता था।परंतु सिक्योरिटी नंबर को सीसीटीवी कैमरे आसानी से ट्रेस कर लेता था।सभी अधिकारियों का मानना है हाई सिक्योरिटी नंबर के चलते जहां एक ओर सीसीटीवी कैमरे की कैद मे इन वाहनों का चालान आसानी से किया जा सकता है वहीं दूसरी तरफ अगर कोई भी वाहन आपराधिक गतिविधियों में शामिल होता है और वह उस पर वाहन चालक भागने का प्रयास करता है तो सीसीटीवी के कैमरे में कैद होता है।उसे पुलिस आसानी से टेस्ट कर लेती है कुल मिलाकर उन्होंने सभी वाहन चालको से अपील किया है कि आप सभी वाहन चालक अपने अपने वाहनों पर हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट का प्रयोग करें।

मण्डल में पहले दिन तेइस हजार से अधिक परीक्षार्थियों ने छोड़ी परीक्षा

अयोध्या।(डाक्टर अजय तिवारी जिला संवाददाता) गुरुवार को बोर्ड परीक्षा के पहले दिन हाईस्कूल और इण्टरमीडिएट की परीक्षा में अनिवार्य विषय हिन्दी की परीक्षा सम्पन्न हुई जिसमें प्रथम पाली में हाईस्कूल हिन्दी / प्रारम्भिक हिन्दी एवं इण्टर की सैन्य विज्ञान तथा द्वितीय पाली में इण्टर की हिन्दी / सामान्य हिन्दी की परीक्षा के दौरान संयुक्त शिक्षा निदेशक, अयोध्या मण्डल, अयोध्या अरविन्द कुमार पाण्डेय के नेतृत्व में मण्डलीय सचल दल ने प्रथम पाली में जनपद अयोध्या के ए०आई०टी० इण्टर कालेज, जगनपुर, फैज ए–आम इण्टर कालेज, रौनाही, आदि शक्ति श्री दुर्गा विद्यामंन्दिर इ0का0 पूरे जिगना मिश्र एवं द्वितीय पाली में राम सेवक इ०का० पाराखान, बच्चू लाल इण्टर कालेज, पूरा व पंडित दीन दयाल इ0का0 बाकरगंज परीक्षा केन्द्रों का सघन निरीक्षण किया एवं व्यवस्थाओं का जायजा लिया।उप निरीक्षक संस्कृत पाठशालायें, अयोध्या मण्डल, अयोध्या मनीषा ओझा की अगुवाई में दूसरे मण्डलीय सचल दल ने प्रथम पाली में जनपद अयोध्या के रामपुर भगन स्थित डायमण्ड इण्टर कालेज एवं कृषक इण्टर कालेज तथा राजू इण्टर कालेज, आगागंज टिकरी और द्वितीय पाली में ए०आई०टी० इण्टर कालेज, जगनपुर, जनसमाज विद्यापीठ इण्टर कालेज, दिगम्बरपुर, आदि शक्ति श्री दुर्गा विद्यामंन्दिर इ0का0 पुरे जिगना मिश्र एवं संत बाल विकास इण्टर कालेज, रायपुर परीक्षा केन्द्रों का औचक निरीक्षण किया।इस दौरान संत बाल विकास इ0का0 परीक्षा केन्द्र पर परिषदीय प्रपत्रों के रख–रखाव में लापरवाही पाये जाने पर उप निरीक्षक, संस्कृत पाठशालायें, द्वारा केन्द्र व्यवस्थापक को कड़ी फटकार लगाते हुये व्यवस्था में अपेक्षित सुधार करने का निर्देश दिया गया।मण्डलीय कन्ट्रोल रूम से प्राप्त सूचनानुसार प्रेस सेल प्रभारी राजेश कुमार शुक्ल' ने बताया कि प्रथम पाली में हाईस्कूल हिन्दी की परीक्षा में अयोध्या मण्डल में कुल अनुपस्थित परीक्षार्थियों की संख्या–12190 रही जिसमें जनपद अयोध्या में

सर्वाधिक 2956, सुलतानपुर में 2756, अम्बेडकरनगर में 2703, बाराबंकी में 2322 एवं अमेठी में 1453 परीक्षार्थी है। इसी क्रम में द्वितीय पाली में इण्टर हिन्दी की परीक्षा के दौरान जनपद अयोध्या में अनुपस्थित परीक्षार्थियों की संख्या–3121, सुलतानपुर में 2415, अम्बेडकरनगर में 2420, बाराबंकी में 1698 और अमेठी में 1388 मण्डल में कुल 11042 रही।इस प्रकार अयोध्या मण्डल में आज कुल अनुपस्थित परीक्षार्थियों की संख्या 23273 रही।जिसमें 41 परीक्षार्थी सैन्य विज्ञान के भी शामिल है। वही अयोध्या जिले में 133 परीक्षा केंद्रों पर प्रथम पाली में हाईस्कूल की परीक्षा शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हुई।ईश्वर दिन इंटर कॉलेज ददेरा में अतिरिक्त केंद्र व्यवस्थापक विमल चंद्र पांडे के न पहुंचने पर जिला विद्यालय निरीक्षक ने उनका वेतन रोका।उन पर बोर्ड परीक्षा में लापरवाही का आरोप विद्यालय के प्रबंध तंत्र को कार्रवाई का निर्देश दिया। मालूम हो कि राम वल्लभा इंटर कॉलेज ड्योढी में विमल चंद्र पांडे अध्यापक है।इस दौरान डीएम नीतीश कुमार ने राजकीय इंटर कालेज परीक्षा केंद्र के साथ–साथ वहां पर बने कंट्रोल रूम का भी निरीक्षण किया। राजकीय इंटर कालेज में बने कंट्रोल रूम से पूरे जनपद के परीक्षा केंद्रों पर नजर रखी जा रहा है।

मुख्य वन संरक्षक ने पौधरोपण तैयारी की परखी हकीकत : मुख्य वन संरक्षक मध्य क्षेत्र बसौढ़ी पौधशाला का किया निरीक्षणः दिए निर्देश

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) प्रदेश में में इस बार बृहद पौधरोपण कार्यक्रम एक बार फिर चलाया जाएगा।जिसके लिए सरकारी पौधशाला पर तैयारियां चल रही है।तैयारियों की हकीकत परखने बुधवार को मुख्य वन संरक्षक मध्य क्षेत्र रेणु सिंह जिले की सीमा पर बसौढी में स्थित राजकीय वन पौधशाला पर पहुचीं जहाँ उन्होंने पौधों को बारीकी से देखा और आवश्यक दिशा निर्देश दिया।इस मौके पर उन्होंने गर्मी के मद्देनजर पौधों की देखभाल पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि हरियाली को लेकर पूरे प्रदेश में अभियान चला रही सरकार इस बार पूरे प्रदेश में 35 करोड़ पौधरोपण कराने का लक्ष्य बनाए है।इसी अभियान के क्रम में पौधशलाओ पर तैयार हो रहे पौधों की हकीकत जानने के लिए लगातार अधिकारी निरीक्षण कर रहे है ताकि लक्ष्य के मुताबिक पौधे वर्षा ऋतु से पहले तैयारी किए जा सके।मुख्य वन संरक्षक(मध्य क्षेत्र) रेणू सिंह के साथ मे डीएफओ सितांशु पांडेय,एसडीओ केएन सुधीर व वन क्षेत्राधिकारी वीरेंद्र तिवारी मौजूद रहे।निरीक्षण के दौरान मेडम ने सभी क्यारियों में रोपित पौधों का क्रमवार बारीकी से निरीक्षण किया।पौधशाला में उगाए गए प्रजातिवार पौधों के बारे में विस्तृत जानकारी लिया।उन्होंने हरिशंकरी पौध व श्री शक्ति पौध रोपित करने का निर्देश दिया।निरीक्षण के दौरान मेडम ने पौधों की क्यारियों को देखकर प्रसन्नता जाहिर किया।बताया कि आगामी वर्षाकाल में होने वाले पौधारोपण को लेकर रेंज की सभी पौधशालाओं में तैयारी जोरों पर चल रही है।सभी पौधशालाओं को अभियान को सफल बनाने के लिए तैयार किया जा रहा है। वन क्षेत्रधिकारी वीरेन्द्र तिवारी ने बताया की आगामी वर्षाकाल में पौधरोपण के लिए इस बार ढेड़ लाख पौध रोपित किये गए है जिसमें आम, अमरूद, नींबू, आंवला ,नीम, पीपल, पाकड़, महुआ, शीशम, जामुन, कंजी सागौन, अर्जुन अशोक, हर सिंगार आदि पौधों की नर्सरी तैयार की जा रही है। इस दौरान वन दरोगा नरेंद्र राव,हरिशंकर,भगौती,अरविंद मिश्रा,शीतला यादव आदि लोग उपस्थित रहे।

सीएचसी पर दवाओं का पड़ा टोटा : मरीज महंगे दामों पर दवा लेने को मजबूर

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मिल्कीपुर पर क्षेत्र से इलाज कराने आए मरीजों व उनके तीमारदारों के साथ डॉक्टरों एवं मेडिकल स्टोर संचालकों द्वारा जबरदस्त खेल खेला जा रहा है। जहां प्रदेश सरकार द्वारा स्वास्थ्य विभाग को लगातार निर्देशित किया जा रहा है कि बाहर से मरीजों को दवाएं न लिखी जाए। वही दूसरी ओर सीएचसी मिल्कीपुर के चिकित्सकों द्वारा क्षेत्र से आए मरीजों को खूब धड़ल्ले से बाहर की दवाएं लिखी जा रही है। बताते चलें कि चिकित्सकों द्वारा लिखी गई दवाएं पूरे इनायत नगर बाजार में किसी भी मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध नहीं है। चिकित्सक द्वारा अस्पताल के बाहर से लिखी दवा सीएचसी मिल्कीपुर गेट पर स्थित आजाद मेडिकल स्टोर पर ही मिलती है। सीएचसी के डॉक्टरों एवं मेडिकल स्टोर संचालकों की करतूतों के चलते मरीज और तीमारदार महंगे दामों पर दवाएं खरीदने को विवश है। बताते चलें कि सोमवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मिल्कीपुर पर क्षेत्र से इलाज कराने आए राम उरेही, शिव लोकन, उर्मिला, रामनरेश, राजकुमार, अवधेश कुमार, राजेश कुमार, फातिमा, रेशमा सहित दर्जनों मरीजों को ओपीडी में बैठे चिकित्सक द्वारा बाहर की दवा लिखी गई। मरीजों का कहना है की सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र केवल कहने को है यहां आए सभी मरीजों को बाहर से ही दवा लिखी जाती है। यहां के चिकित्सकों द्वारा लिखी दवा पूरे इनायत नगर बाजार में कहीं भी नहीं मिलती केवल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गेट स्थित आजाद मेडिकल स्टोर जहां महंगे दामों पर मिलती है। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के फार्मासिस्ट ने बताया कि कान ड्राफ्ट, आंख ड्राफ्ट, खांसी सिरप, गैस तथा दर्द मरहम, एनएस बोतल सहित अन्य दवाए इस समय अस्पताल में नहीं है। स्थानीय लोगों की माने तो सीएचसी मिल्कीपुर गेट पर स्थित आजाद मेडिकल स्टोर को यहां के डॉक्टरों का संरक्षण प्राप्त है। सीएचसी मिल्कीपुर के द्वारा लिखी गई दवाओं से ही उनकी मेडिकल स्टोर का कारोबार काफी तेजी से फल फूल रहा है। सीएचसी मिल्कीपुर के डॉक्टर तथा आजाद मेडिकल स्टोर की कमीशन खोरी से मरीज तथा तीमारदार महंगे दामों पर दवा लेने को मजबूर हैं।

73 ग्राम पंचायतों में प्रधानों को विकास के कार्यो का रोड़ा बना बजट का अभाव

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) जनपद अयोध्या के विकासखंड अमानीगंज के ग्राम पंचायतों में मनरेगा के तहत विकास का कार्य कराए जाने वाले दावे दम तोड़ तो नजर दिखाई पड़े हैं। इस विकासखंड में में विकास के कार्य बजट का अभाव बना रोड़ा 3 वित्तीय वर्ष मनरेगा योजना के तहत कराए गए विकास कार्य का लगभग 8 करोड रुपए का बकाया पड़ा है जिसको लेकर ग्राम प्रधान ब्लॉक मुख्यालय से व जिला मुख्यालय तक चक्कर काटते नजर दिखाई पड़ हैं जनपद अयोध्या का सबसे पिछड़ा ब्लॉक अमानीगंज है। 'अमानीगंज विकास खंड में विकास की रेल नहीं चल पा रही है विकास के कार्य में अधिकांश बजट के में दम तोड़ रहे हैं। मनरेगा योजना के तहत ग्राम सभाओं में कराए गए विकास कार्यों का अधिकांश भुगतान नहीं हो पाया है। ग्राम प्रधान भुगतान प्राप्त करने के लिए ब्लॉक का चक्कर काटते हैं व जिला मुख्यालय में दौड़ लगाते हैं लेकिन नतीजा शून्य ही रहता है । 3 वित्तीय वर्ष ग्राम सभा में मनरेगा योजना के तहत कराए गए विकास का भुगतान लगभग सात करो 7 करोड़ 5100000 26000 का बकाया है जिसका भुगतान होना है,वित्तीय वर्ष वार इस प्रकार होना है बकाया भुगतान, वहीं विकासखंड अमानीगंज में वित्तीय वर्ष वार अगर देखा जाए तो 2021 व 2022 में कराए गए विकास कार्य 73 लाख 73 का भुगतान बकाया है। 2021 युवा 2022 का 50000000 करोड़, 2600000, लाख 29000 भुगतान बकाया है इसी प्रकार 2022 में 2023 में एक करोड़, 48 लाख 25000 वर्ष वार कुल मिलाकर ग्राम सभाओं का है सभी ग्राम सभाओं का मिलाकर 7 करोड़ 5100000 /26,000 हजार रूपये का भुगतान बकाया है ग्राम सभा में कराई गई कराए गए विकास कार्य वह पक्के काम इंटरलॉकिंग नाली खड़ंजा खेलकूद आदि काम शामिल है । ग्राम सभा में कच्चे कार्य तालाब की खुदाई व चौक रोड की पटाई वह भूमि समतलीकरण आदि शामिल है, भुगतान का दिया भरोसा, मनरेगा योजना के तहत कई ग्रामसभाओं में कराए गए विकास कार्य 3 वित्तीय वर्ष का भुगतान नहीं हो पाया है इस संबंध में खंड विकास अधिकारी अखिलेश गुप्ता से पूछा गया था उन्होंने बताया कि यह शासन का मामला है एक ब्लॉक की समास्य नहीं है पूरे उत्तर प्रदेश का है और डोगल सिस्टम है और और कम बजट होने के कारण भुगतान नहीं हो पा रहा है जैसे मार्च में भुगतान होगा वैसे तुरंत सभी का कर दिया जाएगा और मार्च में बजट आने की उम्मीद है।

एक देश में दो कानून कैसे चल रहा है रामचरित्र मानस के अपमान–दिनेश सिंह

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) करणी सेना भारत के जिला अध्यक्ष एवम राष्ट्रीय खिलाड़ी कब्बड़ी दिनेश सिंह ने कहा एक देश में दो कानून कैसे चल रहा है रामचरित्र मानस के अपमान एवम महंत राजू दास जी पर होटल ताज लखनऊ में हुवे जान लेवा हमले के आरोपी समाजवादी पार्टी के नेता स्वामी प्रसाद मौर्य क्यू नही हो रहे है गिरफ्तार उन पर अभी तक अयोध्या में क्यू नही दर्ज हुई एफआईआर उनपर राष्ट्र द्रोह का मुकदमा भी दर्ज हो यदि दो दिन में राष्ट्र द्रोह का मुकदमा दर्ज हो नही होता है तो तुलसीदास उद्यान में होगा आंदोलन एवम जब तक गुंडों माफियाओं के सरकार के नेता स्वामी प्रसाद मौर्या गिरफ्तार नही हो जाते तब तक चलेगा आंदोलन जरूरत पड़ने पर अन्य त्याग कर किया जायेगा आंदोलन क्युकी जब कुरान की प्रतियां जलाने में राष्ट्र द्रोह का मुकदमा लग सकता है तो हमारे रामचरितमानस की प्रतियां जलाने पर क्यू नही लगेगा राष्ट्र द्रोह यह दोहरा माप दंड नहीं चलने देगे।

गन्ने के मूल्य में कोई वृद्धि नहीं : संविदाकर्मियों को 7वें वेतनमान का लाभ

अयोध्या।(राजेश श्रीवास्तव ब्यूरो चीफ अयोध्या) उत्तर प्रदेश के गन्ना किसानों के लिये बुरी खबर है. प्रदेश में मौजूदा पेराई सत्र में गन्ने के मूल्य में कोई बढ़ोत्तरी नहीं हुई है. इसका फैसला मंगलवार को हुई UP कैबिनेट की बैठक में लिया गया. कैबिनेट बैठक के बाद वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने बताया कि कैबिनेट बैठक में 11 अहम प्रस्तावों पर मुहर लगी है। पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी अर्ली 350, सामान्य 340, अन्य 335 रुपये प्रति क्विंटल गन्ने का मूल्य तय किया गया है. पिछले वर्ष निर्धारित गन्ना मूल्य में कोई बदलाव नहीं हुआ है. कैबिनेट की बैठक में टाटा टेक्नोलॉजी के जरिये UP के 150 औधोगिक संस्थानों ITI का उन्नयन करने का फैसला लिया गया है. निर्धारित चयन प्रक्रिया से चयनित सभी संविदाकर्मियों को सातवें वेतनमान का लाभ देने का भी फैसला लिया गया है। संविदाकर्मियों को सातवें वेतनमान का लाभ देने के लिए 29 करोड़ का व्यय भार आएगा. X–Rays टेक्नीशियन और X–Rays लैब टेक्नीशियन के लिए परिषद का गठन करने का फैसला लिया गया. UP स्टाम्प रजिस्ट्रेशन विभाग समूह ग और घ की सेवा नियमावली में भी संशोधन किया गया है. कैबिनेट ने हरदोई–लखनऊ बार्डर पर टेक्सटाइल पार्क के लिए भूमि हस्तांतरण के प्रस्ताव पर अपनी मुहर लगाई है।

अखिल भारतीय प्रधान संघ जंतर मंतर पर देगा अनिश्चित कालीन धरना : मनरेगा के नियमों के विरोध में होगा प्रदर्शन

अयोध्या जिला संवाददाता सुरेंद्र कुमार।भेलसर(अयोध्या) रूदली ब्लाक के सुभाष चन्द्र अग्रवाल सभागार में अखिल भारतीय प्रधान संघ के ब्लाक अध्यक्ष बलभद्र यादव के नेतृत्व में मनरेगा योजना को लेकर ग्राम प्रधानों की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक को सम्बोधित करते हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला अध्यक्ष राजेश प्रताप सिंह ने प्रधानों को अपनी ताकत का एहसास कराते हुए बताया कि ग्राम पंचायत में तैनात सभी सरकारी कर्मचारी आपके अधीन काम करते है।विकास कार्य करने के लिए सचिव मिला है।उन्होंने सभी प्रधानों को संगठित रहने का मंत्र दिया।सरकार मनरेगा जैसी महत्वपूर्ण योजना को खत्म करने पर तुली हुई है जिससे आने वाले समय मे गांव का विकास ठप हो जाएगा और गांव में बेरोजगारी बढ़ जाएगी।आपातकाल में मनरेगा से बहुत से मजदूरों के परिवार पालन पोषण हुआ था।मनरेगा से सबसे पहले प्रधानों पर ही संकट आएगा जो गांव के गरीब मजदूरो को रोजगार से जोड़े रखे है।श्री सिंह ने मनरेगा के भुगतान,मोबाइल से हाजिरी,मनरेगा के नियमों में हुए परिवर्तन को लेकर अनिश्चित कालीन धरना का आवाहन किया।उन्होंने एक गांव से एक मजदूर को जंतर मंतर पर धरने देने के लिए भेजने के लिए कहा। इस मौके पर जगत नारायन मिश्रा उर्फ मेडई महाराज,बबलू सिंह,सतगुरु प्रसाद यादव, हसमत खां, अमरनाथ यादव,पतिराम,पुत्तन खां,बबलू यादव,रामजी शर्मा आदि ग्राम प्रधान मौजूद रहे।

बोर्ड परीक्षा के पहले दिन परीक्षार्थियों के चेहरे पर दिखी खुशी की लहर

अयोध्या।(डाक्टर अजय तिवारी जिला संवाददाता) ना किसी के चेहरे पर उदासी और ना ही किसी के अंदर भय। दिखाई दे रही थी तो परीक्षार्थियों चेहरे पर के खुशी की झलक।गुरुवार को राजकीय इंटर कॉलेज परीक्षा केंद्र पर उस समय दिखाई दिया जब हाई स्कूल की प्रथम पाली की परीक्षा में शामिल हुए परीक्षा देकर वापस लौटते हुए परीक्षार्थियों के चेहरे पर दिखाई दे रही थी।इन सभी परीक्षार्थियों ने एक सुर में सुर मिलाते हुए कहा कि लोगों द्वारा जो हम लोगों पर बोर्ड परीक्षा को लेकर जो डर बनाया गया था वह डर आज पहले दिन हाई स्कूल की परीक्षा में समाप्त हो गया।इन परीक्षार्थियों ने बताया कि बोर्ड परीक्षा को लेकर परीक्षार्थी के अभिभावक व उनके आसपास के लोगों द्वारा जबरदस्ती अपने बच्चों में मन में बोर्ड परीक्षा को लेकर डर बना दते हैं,जबकि ऐसा कुछ नहीं है।आज बोर्ड परीक्षा को भी हम लोग उसी तरीके से दिए जैसे कि हमेशा की तरीके से अपने–अपने स्कूलों कालेजों में गृह परीक्षा को देते चले आ रहे हैं।इस मौके पर जय गणेश इंटर कॉलेज की छात्रा सोनाली श्रीवास्तव ने बताया कि वास्तव में समाचार पत्रों के साथ–साथ उनके अभिभावकों व आसपास के लोगों द्वारा बोर्ड परीक्षा को लेकर परीक्षार्थियों में भय बना दिया जाता है। जिससे उस परीक्षार्थी के अंदर बोर्ड परीक्षा को लेकर भय बना रहता है और चाहकर भी वह पढ़ नहीं पाता।अगर देखा जाए तो बोर्ड परीक्षा हो या गृह परीक्षा मेधावी परीक्षार्थियों के लिए सभी परीक्षाएं एक जैसी ही रहती हैं। उन्होंने बताया कि आज का प्रश्न पत्र बहुत ही सरल था और और आज का पेपर उम्मीद से भी कहीं ज्यादा बहुत अच्छा हुआ है।उसी कड़ी में दसवीं की परीक्षा देने आई जय गणेश इंटर कॉलेज कि परीक्षार्थी आर्या पांडे ने बताया कि बोर्ड परीक्षा के पहले दिन का प्रश्न पत्र बहुत ही सरल और जितना कि हम लोगों ने बोर्ड परीक्षा के बारे में

सुना था उससे कहीं ज्यादा अच्छी तरह से पेपर दिया।उन्होंने बताया कि माता पिता को अपने बच्चों को बोर्ड परीक्षा को लेकर डर नहीं बनाना चाहिए बल्कि उन्हें बोर्ड परीक्षा को एक गृह परीक्षा की तरह से बताकर उन्हें प्रेरणा देनी चाहिए कि यह परीक्षा भी गृह परीक्षा की तरीके से होती है।सरस्वती शिशु मंदिर नानक पुरा की कक्षा 10 की परीक्षार्थी दिव्या ने बताया की आज का प्रश्न पत्र उम्मीद से कहीं बहुत ही ज्यादा सरल था। जिससे अच्छे अंक प्राप्त करने की उम्मीद है।लक्ष्मण बाल विद्या मंदिर के दसवीं कक्षा के परीक्षार्थी पंकज ने बताया आज का प्रश्नपत्र बहुत ही सरल आया हुआ था और आगे भी आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है उनके सभी प्रश्न पत्र अच्छे ही आएंगे और पेपर अच्छे जायेंगें।इसी स्कूल के परीक्षार्थी शिवम यादव व सत्यम ने संयुक्त रूप से बताया जो बच्चे मेहनत से पढ़ते हैं उनके लिए चाहे बोर्ड परीक्षा हो या फिर गृह परीक्षा हो।उनके लिए कोई मायने नहीं रखता।पढ़ने वाले बच्चे हमेशा अच्छे अंक ही लाते हैं।जिस पर उन्होंने बताया कि आज का प्रश्न पत्र हमारे लिए उम्मीद से कहीं ज्यादा सरल दिखाई दिया।कुल मिलाकर राजकीय इंटर कॉलेज परीक्षा केंद्र से निकलने वाले सभी परीक्षार्थियों के चेहरों पर खुशी तो दिखाई ही दिया साथ ही साथ इन परीक्षार्थियों ने सभी अभिभावकों के साथ साथ सभी लोगों को से यह भी अपील किया कि वह अपने अपने बच्चों को बोर्ड परीक्षा के प्रति डराए नहीं बल्कि उन्हें एक ही बात कहें कि यह परीक्षा भी गृह परीक्षा की तरीके से है बस जरूरत है मेहनत करने वाले परीक्षार्थियों की जो मेहनत करेगा उसी को अंक ज्यादा मिलेंगे चाहे वह गृह परीक्षा हो या फिर बोर्ड की परीक्षा।

एएनएम प्रशिक्षण केन्द्र में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहीं छात्राओं ने ली नर्सिंग की शपथ

अयोध्या।गुरुवार को एएनएम प्रशिक्षण केन्द्र दर्शन नगर में एएनएम का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहीं प्रथम बैच की छात्राओं ने प्रशिक्षण केंद्र पर अयोजित लैंप लाइटिंग और शपथ ग्रहण समारोह में कैंडल जलाकर मानव सेवा, दृढ़ता, कर्तव्यनिष्ठा और समर्पण की भावना रखने की शपथ ली।समारोह का शुभारंभ अपर निदेशक, चिकित्सा स्वास्थ्य और परिवार कल्याण अयोध्या मण्डल डा अशोक कुमार श्रीवास्तव और मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ अजय राजा ने संयुक्त रूप से मां सरस्वती को नमन करते हुए दीप प्रज्ज्वलित कर किया।लैंप लाइटिंग और शपथ ग्रहण समारोह फ्लोरेंस नाइटेंगल, दी लेडी विद लैंप को श्रद्धांजलि है। यह समारोह छात्रों को नर्सिंग के महान पेशे में आरंभ/शुरुआत करता है।लैंप लाइटिंग इन युवा छात्रों के बीमार और घायलों की देखभाल के लिए प्रशिक्षित किए जाने के दृढ़ निर्णय को दर्शाता है। समारोह के अवसर पर अपर निदेशक डॉ श्रीवास्तव ने छात्राओं को प्रेरित करते हुए कहा कि प्रशिक्षण उपरान्त आप सभी निःस्वार्थ भाव से मानव सेवा करेंगे और बिना किसी भेदभाव के सभी लोगों को सेवा देंगे। हम सभी मरीजों को दवा के साथ साथ अपने व्यवहार से भी ठीक करने का प्रयास करेंगे।मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ अजय राजा ने कहा कि नर्सेज स्वास्थ्य के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।अस्पतालों में मरीज सबसे ज्यादा विश्वास भी उन्ही पर करते हैं। अपने व्यवहार तथा अपने दायित्व

को समझना सबसे अधिक आवश्यक है और साथ ही बदलते दौर में खुद को हर वक्त अद्यतन किए जाने की भी जरुरत है।संयुक्त निदेशक डा रमेश कुमार ने कहा कि नर्सिंग ऐसा क्षेत्र है जो सीधे इंसानियत की सेवा से जुडा है और पीड़ित मानवता की सेवा ईश्वर की सेवा है।अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा राकेश कुमार सक्सेना ने कहा कि यह समारोह उस रोशनी का प्रतीक है जो एक नर्स या एएनएम अपने रोगियों के लिए बन जाती है और पीड़ित लोगों के लिए आशा और उम्मीद की प्रतीक है।इस मौके पर नोडल अधिकारी प्रशिक्षण डा वेद प्रकाश त्रिपाठी,श्रीमती रीतू सिंह पीएचएन ट्यूटर ने किया।

जैन आचार्य लोकेशजी ने अयोध्या में भगवान श्रीराम मंदिर एवं भगवान आदिनाथ के समक्ष ध्यान एवं विश्व शांति की करेंगे प्रार्थना

अयोध्या (जिला संवाददाता) सुरेंद्र कुमार : विश्व शांतिदूत आचार्य लोकेशजी ने दिल्ली के रामलीला मैदान में आयोजित जमीयत उलामा–ए–हिन्द के अधिवेशन में मौलाना अरशद मदनी द्वारा कही विवादित बातों का मंच से ही विरोध किया था, जिसकी चर्चा जहां आज देश–विदेश में हो रही हैं, तो वहीं जैन समाज के यह प्रख्यात संत आचार्य लोकेशजी अयोध्या में श्री रामलला दरबार सहित हनुमानगढ़ी एवं भगवान आदिनाथ के मंदिर में ध्यान कर देश की एकता, अखंडता, खुशहाली, शांति, सौहार्द एवं विश्व शांति के लिए प्रार्थना की। उल्लेखनीय है कि दिल्ली से आज प्रातः अयोध्या के लिए रवाना हुए।अहिंसा विश्व भारती के संस्थापक आचार्य डॉ लोकेशजी ने संवाददाताओं से चर्चा करते हुए बताया कि दिल्ली के रामलीला मैदान में उन्होंने जो भूमिका अदा की वह प्रभु श्री राम की अदृश्य शक्ति के कारण ही संभव हो पाया, उन्ही की प्रेरणा शक्ति से लाखों की भीड़ में अपनी बात निर्भीकता पूर्ण प्रस्तुत कर शास्त्रार्थ के लिए आमंत्रित कर सका। अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त जैन आचार्य डॉ लोकेशजी ने यह भी बताया कि प्रभु श्री राम एवं प्रभु श्री आदिनाथ के समक्ष मैं ध्यान लगाकर देशवासियों की खुशहाली, विश्व में शांति और समृद्धि के लिए प्रार्थना करूँगा।

उप जिलाधिकारी ने लिया परीक्षा केंद्रों का जायजा

अयोध्या (जिला संवाददाता) सुरेंद्र कुमार। मिल्कीपुर–अयोध्या। यूपी बोर्ड परीक्षा के लिए मिल्कीपुर तहसील क्षेत्र में कुल 34 परीक्षा केंद्र बनाए गए है, सभी केंद्रों पर स्टेटिक मजिस्ट्रेट तैनात किये गये है। कड़ी निगरानी के बीच पहले दिन पहले पाली की परीक्षा संपन्न कराई गई।यूपी बोर्ड हाईस्कूल व इंटर की परीक्षा में कड़ी चौकसी देखने को मिली। शासन के नकलविहीन परीक्षा कराने के निर्देशों का असर भी दिखाई दिया। स्टेटिक मजिस्ट्रेट तय समय से पहले ही आवंटित परीक्षा केंद्रों पर पहुंचे।प्रशासन की परीक्षा केंद्रों की घेराबंदी के चलते पहले दिन कोई नकलची नहीं मिला। हाई स्कूल व इंटरमीडिएट के लगभग 23 हजार छात्र– छात्राओं ने गुरुवार को अपनी परीक्षा दी। उपजिलाधिकारी मिल्कीपुर अमित कुमार जायसवाल तहसील क्षेत्र के परीक्षा केंद्र बने विद्या मंदिर इंटर कॉलेज मिल्कीपुर सरस्वती जूनियर हाई स्कूल सरूरपुर समेत अन्य परीक्षा केंद्रों का जायजा लेते हुए स्टैटिक मजिस्ट्रेटों को आवश्यक दिशा निर्देश भी दिए। ताकि परीक्षा के दौरान किसी प्रकार की कोई व्यवधान उत्पन्न ना हो सके। एसडीएम ने बताया कि तहसील क्षेत्र में बने परीक्षा केंद्रों पर हाईस्कूल व इंटरमीडिएट के लगभग 23हजार छात्र–छात्राओं की परीक्षा को शांतिपूर्ण माहौल में निपटाने के लिए एक जोनल मजिस्ट्रेट, तीन सेक्टर मजिस्ट्रेट और 34 स्टैटिक मजिस्ट्रेट एवं पुलिस के जवान लगाए गए हैं। इसके साथ ही साथ सभी केंद्रों को सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं जो गतिशील हैं। परीक्षा के दौरान यदि किसी छात्र के द्वारा नकल करने का प्रयास किया जाएगा तो तुरंत सीसीटीवी कैमरे के माध्यम से पकड़ में आ जाएगा और उसके खिलाफ विधिक कार्यवाही सुनिश्चित कराई जाएगी।

मादक पदार्थ के साथ युवक गिरफ्तार

अयोध्या (जिला संवाददाता) सुरेंद्र कुमार।सोहावल–अयोध्या। रौनाही थाना क्षेत्र की पुलिस चौकी सत्तीचौरा क्षेत्र के बरई खुर्द निवासी मुकेश कुमार पुत्र ननकऊ को चौकी प्रभारी रविश कुमार यादव धनंजय कुमार ने मोहम्मद पुर तिराहे से 15 ग्राम मादक पदार्थ मार्फिन बरामद कर एनडीपीएस के तहत गिरफ्तार कर जेल भेजा।

सम्पादक मंडल
श्री शिवशंकर द्विवेदी संयुक्त सचिव (सेवा निवृत्त) उ0प्र0 शासन, लखनऊ, पं. लाल साहब उपाध्याय (सत्यवेदानन्द जी), बाबा शक्ति नाथ (ज्योतिषाचार्य)श्री विजय कुमार तिवारी, श्री दीपचन्द्र मौर्य (एडवोकेट), श्री सुभाष चन्द्र सेठ,श्री ऋषिकेश द्विवेदी, श्री शिवशंकर तिवारी
प्रमुख कार्यालय– हिन्दी साप्ताहिक " देश की उपासना"
पता–ई 3464,राजाजी पुरम्(निकट मिनी स्टेडियम) लखनऊ उ0प्र0
लखनऊ सम्पादक– श्री पी0सी0श्रीवास्तव मों0 9415545107

स्वात्वाधिकारी की ओर से श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव पत्नी श्री प्रभुदयाल श्रीवास्तव मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक द्वारा देश की उपासना प्रेस, उपासना भवन, धर्मसारी, प्रेमापुर, जौनपुर उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक
श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव

सह सम्पादक
श्रीमती हेमा त्रिपाठी
मो0–7007415808,9628325542,9415034002

RNI संन्दर्भ संख्या – 24/234/2019/**R-1**
deshkiupasanadailynews@gmail.com

उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है,समाचार पत्र में प्रकाशित लेख/समाचारों से सम्पादक की सहमति अनिवार्य नही
समाचार–पत्र से सम्बन्धित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जौनपुर न्यायलय होगा।